लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नवीन पूर्वांचल संदेश

वार्षिक पत्रिका : 14वाँ अंक
2019

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग - 793001

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर
दीप प्रज्वलन करते हुए मुख्य अतिथि

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर दीप प्रज्वलन
करते हुए उप महालेखाकार (ले.व.ह.)

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर
मुख्य अतिथि व प्रधान महालेखाकार

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के
13 वें अंक का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि व प्रधान
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.)

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर मंच का संचालन करते हुए
श्री राकेश रंजन मिश्रा, वरिष्ठ अनुवादक

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर बच्चों द्वारा नृत्य प्रदर्शन

नवीन पूर्वांचल संदेश

वार्षिक पत्रिका : 14वाँ अंक

पत्रिका परिवार

संरक्षक : श्री अथिखो चलाई

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

मेघालय, शिलांग

प्रधान संपादक : श्री पृथ्वीपाल सिंह कानावत

उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदाता : श्री आनन्द कौशल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मंडल : श्रीमती स्निग्धा फुकन, हिंदी अधिकारी

श्री राकेश रंजन मिश्रा, वरिष्ठ अनुवादक

श्री पुरूषोत्तम गिरि, कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती शालिनी दहिया, कनिष्ठ अनुवादक

आवरण पृष्ठ

मेघालय के पर्यटन स्थलों की झल्कियाँ

नोट : पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं, उससे संपादक मंडल या संरक्षक का सहमत होना आवश्यक नहीं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नवीन पूर्वांचल संदेश

वार्षिक पत्रिका : 14वाँ अंक

वर्ष : 2019

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृ.सं.
1	'आनन्द भूमि' भूटान की यात्रा – एक संस्मरण	पृथ्वीपाल सिंह कानावत	1
2	मूषक	पुरूषोत्तम गिरि	3
3	मेरी मैहर यात्रा	सुरेन्द्र कुमार	5
4	परिवार	आकांक्षा पटेल	6
5	गुरू और चेला	पीटर चौधुरी	7
6	देवी गीत	सुरेन्द्र कुमार	8
7	डस्टबिन – स्वच्छता का निशान	राकेश रंजन मिश्रा	8
8	जिंदगी की धूप–छाँव	विकास कुमार	9
9	पर्यावरण	मनीष कुमार	10
10	जनसंख्या विस्फोट	अमित कुमार बर्मन	11
11	अंतर्बोध	आनन्द कौशल	15
12	यादों का असर	नरेश कुमार यादव	18
13	स्मृतियाँ	कुमारी सरिता रानी	18
14	समय का महत्व	अमित कुमार बर्मन	19
15	मंदी की मार	सुभ्रांषू शेखर	19
16	मंगल पर पहुँचेगी हिंदी	पुरूषोत्तम गिरि	20
17	हिम्मत न हारो	चन्दन कुमार	22
18	गर्भ में मुझे मत मारो	सोनी कुमारी	22
19	समय का महत्व	क्रिश राज देब	23
20	बस एक कदम और	चंद्रशेखर कुमार	24
21	मन के हारे हार है	क्रिश राज देब	25
22	मातृ दिवस	मधुश्री देब	26
23	हिन्दी	मनीष कुमार	26
24	प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष.....	विक्रमजीत घोष	27
25	इश्क	भागीरथ प्रसाद	28
26	मौसम के रूप	गौतम वर्मा	29
27	अखण्ड विचार है अपना	रीना मिश्रा	30
28	बचपन की यादें	संगम कुमारी	31
29	बारिश की बूँदें	प्रांजलि मिश्रा	32
30	पगडंडियाँ	ममता दे	32

31	मैं पैसा हूँ	अमित कुमार बर्मन	33
32	आज की द्रौपदी	शंकर बी थापा	34
33	स्वच्छता	रमेश कुमार बिस्वा	35
34	जेम (GeM) सुविधा का अंदाज	दीनानाथ शाह	36
35	अंधराष्ट्रभक्त	स्निग्धा फुकन	37
36	अंग्रेजी का भूत	मंजिता राय चौधुरी	38
37	दहेज प्रथा	मनीष कुमार	38
39	पर्यावरण रक्षा	हिमानिश राय चौधुरी	39
40	संकेत संचार	प्रियतोष चौधुरी	39
41	कल्पना	राज कुमार सुनार	40
42	तारे	राज कुमार सुनार	40
43	अनमोल वचन	शयंत्तनी गुप्ता	41
44	भ्रमण की कहानी	माधवी देब	42
45	तीन का चक्कर	प्रियतोष चौधुरी	43
46	बोलो चिड़िया	उमा देवी थापा	43
47	दुख दर्द अपने अपने	जेनेविव हेक	44
48	तोहफा	जेनेविव हेक	44
49	श्री	राज कुमार सुनार	44
50	इंटरनेट की आवश्यकता	मधुश्री देब	45
51	धोखा	भागीरथ प्रसाद	46
52	बेटियाँ	नमिता भट्टाचार्य	51
53	वादा	जेनेविव हेक	51
54	कार की चमत्कार	स्वास्तिक बी रसाईली	52

सुभाषित

अपनी निंदा और प्रशंसा पराई निन्दा और पराई स्तुति – यह चार प्रकार का आवरण श्रेष्ठ पुरूषों ने कभी नहीं लिया।

- वेदव्यास

आचरण केवल मन के स्वप्नों को कम नहीं बना करता। उसका सिर तो शिलाओं के ऊपर घिस-घिस कर बनता है।

- सरदार पूर्ण सिंह

अहिंसा ही धर्म है। अधर्म से प्राप्त वस्तु को अस्वीकार करना ही व्रत है। अनिच्छा से रहना ही तय है। किसी से कपट न करना ही भक्ति है। सुख-दुःख अदिदंद्रों में समभाव से रहना ही समायाचार है। यही सत्य है।

- वसवेश्वर

सदाचार के लिए कोई राजपथ या तैयार मार्ग नहीं है।

- चमसन ब्राउन

सदाचार वह स्रोत है जहां से सम्मान जन्म लेता है।

- किस्टोफर माचों

एक बार वैमनस्य स्थापित हो जाने पर भय और अविश्वास की मनोवृत्ति जागृत हो जाती है।

- बाबू गुलाब राय

हम अपने रहन-सहन को ही ऊंचा नहीं करें बल्कि जूसरों के रहन-सहन के ऊंचे होने में भी सहायक बनें। दूसरों के साथ प्रेम व्यवहार से उनके हीनता भाव को दूर करें।

- बाबू गुलाब राय

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, सहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा बोलियों के भाव जीवंत हैं। भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में इस संबंध में समुचित प्रावधान किए गए।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। मैं भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **कंठस्थ** का निर्माण किया है। स्मृति आधारित इस अनुवाद कार्य प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर सकता है जिससे समय की काफी बचत होती है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए **लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप** तैयार किया गया है जिसके माध्यम से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं में निःशुल्क हिंदी सीख सकते है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम आदमी सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ उठा सके।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली एवं नए भारत का निर्माण करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण एवं समृद्ध भाषा के रूप में विश्व भाषा बनेगी।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से पुनः हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2019

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)
मेघालय, शिलांग

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय के हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 14वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता और प्रगतिशील वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पत्रिका के प्रकाशनार्थ उन अधिकारियों और कर्मचारियों का सहयोग सराहनीय है जिनकी रचनाएं इसकी शोभा बढ़ाती हैं। मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने के लिए प्रेरणा मिलेगी।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

अ. चलाई

(अथिखो चलाई)

सत्यमेव जयते

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)
मेघालय, शिलांग

संदेश

पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के इस अंक के प्रकाशन हेतु इस संदेश को लिखते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका कार्यालय कर्मियों के हिंदी के प्रति उत्साह व उसे सीखने की ललक की द्योतक है। ऐसे अभिनव प्रयासों से ही हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। कार्यालय कर्मियों एवं अन्य सहयोगियों के लेख, कविता, संस्मरण आदि से सुशोभित इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभेच्छु,

(पृथ्वीपाल सिंह कानावत)
उप महालेखाकार (प्रशासन)
एवं प्रधान संपादक
'नवीन पूर्वांचल संदेश'

सत्यमेव जयते

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)
मेघालय, शिलांग

संदेश

कार्यालयीन पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 14वें अंक का प्रकाशन देखकर खुशी हो रही है। शासकीय कामकाज में राजभाषा हिंदी की निरंतर हो रही प्रगति हमारे लिए हर्ष का विषय है। प्रत्येक वर्ष इस पत्रिका के सफल प्रकाशन को देखकर सुखद अनुभूति होती है। इसे देखकर पता चलता है कि 'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों में उत्साह की कमी नहीं है।

संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

(राकेश सी. सज्जन)
उप महालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी)

संपादकीय.....

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग के द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 14वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रचनाओं के साथ–साथ राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्यालय में संचालित विभिन्न गतिविधयों को समाहित किया गया है। देशहित में आज हमारे समाज के लिए भाषा देश के विकास में बाधक न बनें इसके लिए हिंदी को वैश्विक बनाना जरूरी है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के द्वारा हिंदी के संवर्धन में सार्थक प्रयास किया गया है।

भारतवंशियों को अपने संघर्ष हेतु एकजुट करने एवं प्रतिष्ठित स्थान दिलाने में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका सदियों से रही है। आज हिंदी विश्व पटल पर अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। भारत की बढ़ती हुई शक्ति के साथ हिंदी का वर्चस्व और संख्या बल भी वैश्विक धरातल पर बढ़ रहा है। ऐसे में हिंदी के प्रचार–प्रसार के प्रति हम सभी भारतीयों की जिम्मेदारी और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

वर्तमान समय में हिंदी में उच्चस्तरीय शोध और लेखन हो रहा है। देश–विदेश में प्रकाशित होने वाले पत्र–पत्रिकाओं ने हिंदी को विश्व भाषा बनाया है। विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लोगों के माध्यम से भी वैश्विक स्तर पर हिंदी प्रसारित हो रही है। इससे हमारी संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म को वैश्विक स्तर पर मजबूती मिल रही है।

पत्रिका के इस अंक को रोचक बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। आशा है आपको यह अंक पसन्द आएगा। पत्रिका के प्रति आपकी प्रतिक्रिया निःसंदेह इसे आगे बढ़ाने में हमारी सहायता करेगी।

साभार!

जय हिंद! जय हिंदी!

राजभाषा प्रकोष्ठ

पाठकों के अनमोल विचार.....

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका ''नवीन पूर्वांचल संदेश'' के 13वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद! पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं अन्य विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय है। श्री पुरूषोत्तम गिरि का लेख 'अरूणिमा' प्रेरणात्मक है। श्री सर्वेन्द्र कुमार का लेख 'समावेशी विकास' एवं श्री भागीरथ प्रसाद का लेख 'घरेलू हिंसा' समीक्षात्मक है। कविताओं में सुश्री पल्लवी सोम की 'जिंदगी के रास्ते' सुश्री नमिता भट्टाचार्जी की 'माँ मैं डरती हूँ' एवं सुश्री वीणा कुमारी राय 'कर्ज चुकाना है' आदि काफी रोचक एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु हार्दिक बधाईयाँ। कार्यालय परिवार पत्रिका की अविरल प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

लेखा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं ह.)–प्रथम, उ.प्र. इलाहाबाद

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के तेरहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। पत्रिका की साज–सज्जा भी अत्यंत सराहनीय है। श्री विक्रमजीत घोष का 'दिव्य मृत्यु', श्रीमती स्निग्धा फुकन का 'प्लास्टिक प्रदूषण' श्री नीरज कुमार गुप्ता का 'हिंदी शर्म की नहीं, गर्व की भाषा है', श्री भागीरथ प्रसाद का 'घरेलु हिंसा' एवं सुश्री पल्लवी सोम की कविता 'जिन्दगी के रास्ते' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। उत्कृष्ट साज–सज्जा एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

(रवीन्द्र नाथ चाँद)

संपादक (वातायन)/हिंदी अधिकारी

कार्यालय – महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय के वार्षिक पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' की प्राप्ति हुई, धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं प्रभावशाली एवं रोचक हैं।

श्री विक्रमजीत घोष का लेख 'दृव्य मृत्यु', श्रीमती रीना मिश्रा का लेख 'मैं नदी हूँ, नाला नहीं', कुमारी प्रांजलि मिश्रा की कविता 'मेरी तितली रानी' एवं श्री अमित कुमार की कविता दुनिया की सैर सराहनीय है।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य की आशा करते हैं।

(आईशा शेख)

हिंदी अधिकारी

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, तेलंगाना, हैदराबाद

आपके कार्यालय के हिंदी पत्रिका नवीन पूर्वांचल संदेश अंक की प्रति प्राप्त हुई है। मेघालय राज्य के लोक नृत्य के चित्र से सुसज्जित पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत सुन्दर है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं जैसे 'अरूणिमा', 'शिक्षा का महत्व', 'धर्म : विश्वास बनाम विचार', 'घरेलू हिंसा', 'एक अजब राजा की कहानी', 'हमारे दैनिक जीवन', 'पेशेवरों और विपक्ष पर इंटरनेट का प्रभाव' और 'आरक्षण : वरदान अथवा अभिशाप' लेख तथा 'बेटियां', 'जिंदगी के रास्ते', 'मंजिल आसमानों की', 'दुनिया की सैर', 'फूल हमेशा मुस्कुराता है', 'किलकारी' और 'कर्ज चुकाना है' कविताएं अत्यंत रोचक व उत्कृष्ट हैं। स्वतंत्रता दिवस समारोह–2018 तथा राजभाषा हिंदी से संबंधित विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ अत्यंत सुन्दर है। हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

(जे.के.तागड़े) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)–III, महाराष्ट्र, मुंबई

''आनन्द भूमि'' भूटान की यात्रा – एक संस्मरण

पृथ्वीपाल सिंह कानावत,
उप महालेखाकार

गत वर्ष, 01 से 09 जून, 2018 तक मैं भूटान की रोमांचक यात्रा पर रहा। मेरे भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा के 2012 बैच के, शिमला स्थित हमारी राष्ट्रीय अकादमी में प्रशिक्षण में सम्मिलत दो भूटानी अधिकारियों में से एक क्वनजेंग वांगचुक मेरे सम्पर्क में थे। साथ ही भूटान के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (SAI, Bhutan) के कुछ अधिकारियों का भी मेरी इस यात्रा में सहयोग रहा।

मैं अपने माता–पिता के साथ अपनी सिक्किम यात्रा पूरी कर 30 मई, 2018 को गंग्टॉक से बागडोगरा (पश्चिम बंगाल) पहुँच गया एवं 31 मई 2018 को माता–पिता को जयपुर का विमान पकड़ने हेतु हवाई अड्डे पर छोड़कर दोपहर को बस द्वारा जयगाँव (पश्चिम बंगाल) हेतु रवाना हो गया। जयगाँव भूटान सीमा पर स्थित एक कस्बा है, जो कि भूटान के कस्बे फिऊनशोलिंग (Phuentsholing) से लगा हुआ है। दोनों कस्बों के मध्य स्थित है ''भूटान दरवाजा'' (Bhutan Gate), जिसके द्वारा आप भूटान में प्रवेश हेतु आवश्यक अनुज्ञा–पत्र (Permit) प्राप्त करने से संबंधित कार्यालय पहुँच सकते हैं। यह कार्यालय ''भूटान दरवाजे'' से लगभग 200–300 मीटर की दूरी पर स्थित है। इसकी ओर बढ़ते हुए मुझे सड़क पार करने का प्रयास करते देख एक यातायात पुलिसकर्मी ने निदेश दिए कि नियमानुसार 'मुझे जेब्राक्रॉसिंग' से ही सड़क पार करनी है। यह सुनकर मुझे भूटान में प्रवेश की अनुभूति हुई एवं अपने देश से वहाँ का अंतर भी ज्ञात होना प्रारम्भ हुआ। छोटा सा फिऊनशोलिंग कस्बा आपको यह ज्ञान करवाता है कि भूटान एक अत्यंत ही कम जनसंख्या वाला राष्ट्र है। साफ–सुथरी सड़कें, करीन से खड़े वाहन, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण रहित वातावरण, भवनों का एकरूप वास्तु, भूटानी वेशभूषा (पुरूषों हेतु ''गोह'' और ''कीरा'') में घुमते हुए लोग आदि सभी कुछ अत्यंत लुभावना था। अनुज्ञा–पत्र प्राप्त कर भूटानी सिम (SIM) लेकर एवं एक भोजनालय में दूध का सेवन कर थिम्पू की यात्रा, कार द्वारा, वाहन चालक और सहयात्रि यांगकुमार के साथ प्रारम्भ हुई। बड़े ही सुन्दर पहाड़ों, झरनों व हरियाली से युक्त मार्ग था। सड़क पर इक्का–दुक्का वाहन ही मिल रहे थे, वातावरण अत्यंत शांत व रमणीय था। मुझे लगा कि स्वीट्जरलैंड भी इससे अधिक क्या ही सुन्दर होगा। शाम होते–होते मैं थिम्पू पहुँच गया। लगभग साढ़े सात लाख की जनसंख्या वाले देश की लगभग एक लाख जनसंख्या वाली राजधानी बड़ी सुन्दर एवं विलक्षण प्रतीत हुई। मुख्य मार्ग पर चार मित्र यथा हाथी, बंदर, खरगोश व बटेर (तीतर, चकोर जैसा पक्षी) वाली बौद्ध जातक कथा के चित्र एवं प्रतिकृति वाला चौराहा अलग से दृष्टिगत हुआ। थिम्पू की चौड़ी सड़कें, आभा व चहल पहल मनमोहक थी। अतिथि गृह में पहुँच कर सामान रख कर सीधे एक भोजनालय पहुँचा, जहाँ मेरे भूटानी मित्रों वांगचुक, नामगेह, पेमा आदि ने रात्रि भोज हेतु मुझे आमंत्रित किया था। उनसे मिलकर प्रसन्नता हुई एवं भोजन में बड़ा आनन्द आया।

अगले दिन थिम्पू के मुख्य पर्यटन स्थलों यथा बुद्धा प्वाइंट, मेमोरियल चोटेन, संसद भवन परिसर आदि का भ्रमण किया। भूटानी हस्तशिल्प की एक दुकान से भूटानी संस्कृति के अभिन्न अंग माने जाने वाले चार मुखौटों का जोड़ा खरीदा। ताक, छांग, छुक, ड्रूक जैसे नाम वाले ये चार लकड़ी के मुखौटे बाघ, सफेद

शेर, गरूड़ एवं ड्रैगन के होते हैं। मुख्य सड़क के पास लगभग 100 पारम्परिक दुकानों वाले बाजार से भी कुछ परम्परागत सामान क्रय किया। बुद्ध प्वाइंट से थिम्पू के विहंगम दृश्य का अवलोकन किया व शाम को भूटान के राष्ट्रीय पशु ''ताईकिन'' को देखने ''ताईकिन रिजर्व'' भी गया।

इसके अतिरिक्त थिम्पू से भूटान निर्मित ''जैम'' क्रय किया व रात्रि को थिम्पू के सुसज्जित ''जोंग'' को निहारा। किसी अन्य दिवस को थिम्पू के ''सिम्पली भूटान'' जाकर भूटान की संस्कृति से साक्षात्कार किया। यहाँ भूटानी नृत्य व भोजन का आनन्द लिया एवं यहाँ पांव से कलाकृति बनाने वाले कलाकार को कार्य करते देख विस्मित हुआ।

लगभग तीसरे दिन थिम्पू से पारो पहुँचा व तातसांग मठ तक चढ़ाई चढ़ इस विलक्षण स्थान का आनन्द लिया। उसी रात थिम्पू पहुँचकर अगली सुबह, भूटान की पूर्व राजधानी पुनाखा हेतु रवाना हुआ। बीच में दोचुला के सुन्दर बौद्ध स्थल पर रूके व वहाँ से दूरबीन द्वारा हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों को देखा। अलौकिक अनुभूति थी।

पुनाखा का दो नदियों के बीच स्थित जोंग अद्भुत था। उसमें वह स्थान जहाँ आज तक राजाओं का राज्याभिषेक किया जाता है, अत्यंत भव्य एवं आकर्षक था। पुनाखा से लौटकर अगले दिवस ''हा'' घाटी व चेलेला गए। वहाँ स्थित भारतीय–भूटानी सेना कार्यालय की कैंटीन से कुछ वस्तुएं खरीदी। वापसी में मित्र नाम्गे के सुसराल गए। यहाँ मुझे भूटान के सरल व सादे, ग्रामीण जीवन की झलक मिली।

वहाँ से लौटकर अगले दिन फॉबजिका घाटी गए। यह अत्यंत हरी–भरी व लुभावनी घाटी आपको अलौकिक आनन्द देती है। मैं और मित्र नाम्गे कुछ देर इसको निहारते रहे व सर्दियों में यहाँ आने वाले ''काले सारस'' में से यहाँ छूट गए एक घायल सारस को भी देखा। यहाँ से गांगते मठ गए जहाँ छोटे–बड़े पचासों बौद्ध भिक्षुओं के जीवन को निकट से देखा व उनसे वार्ता की। क्या आध्यात्मिक अनुभूति थी..... शब्दों से परे। ऐसा प्रतीत हुआ कि गौतम बुद्ध यहीं कहीं आस–पास तपस्यारत हैं। ''ऊँ मणी पेमे हुम'' के मंत्रों में रचा–बसा अद्भुत संसार था। आत्मा प्रसन्न और जीवन धन्य हुआ। आज भी भूटान की वह यात्रा एक सुखद स्वप्न की भांति स्मृति पटल पर अटल है। भूटान आज भी मुझे अपनी ओर उतना ही आकर्षित करता है जितना वहाँ जाने से पूर्व करता था।

प्रसन्नता एवं आनन्द को यदि मूर्त रूप में देखना है तो भूटान जाईए!

"अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है।"

महात्मा गा¡धी

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है" स्वामी दयानंद सरस्वती

मूषक

-- पुरूषोत्तम गिरि,

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

'मूषक' संस्कृत का एक शब्द है। मूषक हिन्दी भाषा में उपलब्ध भारतीय सामाजिक जालस्थल है। इसके संस्थापक भारतीय हैं। मूषक विगत कई वर्षों से भारत को अपना सोशल नेटवर्क देने का प्रयास कर रहा था। मूषक का मानना था कि भारत जैसे वृहद राष्ट्र के लिए डिजिटल स्वावलंबन परम आवश्यक है। मूषक एक स्वच्छ और स्वस्थ चर्चा का मंच है जहाँ हर वर्ग और हर विचार के लिए समान अवसर है। इसके निर्माणकर्ता और मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अनुराग गौड़ हैं। मूषक में 500 अधिकतम अक्षर में अपना संदेश लिखा जा सकता है। मूषक को पूरी तरह से हिंदी में संचालित करने के लिए दो विकल्प दिए गए हैं। यदि कोई मूषक का खाताधारक चाहे तो हिन्दी में टाइप कर सकता है या फिर दूसरा विकल्प रोमन में टाइप करने का है, जिसे मूषक स्वयं देवनागरी लिपि में बदल देगा। कम्प्यूटर अथवा स्मार्टफोन पर हिन्दी टाइप करना रोमन लिपि पर आधारित है, इसलिए लोग हिन्दी लिखने से कतराते हैं। आज के डिजिटल युग में बदलती तकनीक के साथ हिन्दी को लोगों से परिचित कराना होगा, ताकि लोग रोमन लिपि से पिछड़कर अपनी पहचान ना खो दें। मूषक का एक मोबाइल एप्लिकेशन भी है जो कि एंड्रॉइड "गूगल प्ले स्टोर" पर उपलब्ध है तथा इसके अलावा कम्प्यूटर पर इसे गूगल सर्च में डब्लूडब्लूडब्लू डॉट मूषक डॉट इन के नाम से खोजा जा सकता है। दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन 9 सितम्बर 2015 को भोपाल में पुणे के श्री अनुराग गौड़ एवं उनके साथियों ने पूरी तरह हिन्दी में काम करने वाला "मूषक सोशल नेटवर्किंग साइट" देशवासियों और हिन्दी प्रेमियों के लिए पेश किया था ! उनके अंदर भी अपनी मातृभाषा के लिए कुछ करने की ललक थी !

भाषा वैज्ञानियों का मानना है कि जो भाषा हम बोलना जानते हैं, उसे थोड़े प्रयत्नों से ही सरलता से लिखना सीख जाते हैं। 'मूषक' का उद्देश्य हिन्दी और देवनागरी को आज की पीढ़ी के लिए प्रचलित करना है। सोशल मीडिया, माइक्रो ब्लॉगिंग पर हिन्दी में अपनी बात कहने और हिन्दी भाषी लोगों के लिए माइक्रो ब्लॉगिंग साइट के अनुभव बेहतर बनाने के लिए माइक्रो ब्लॉगिंग साइट 'मूषक' शुरू की गई। मूषक की स्थापना के पीछे श्री अनुराग गौड़ का सबसे बड़ा मकसद यह अहसास करवाना था कि हिन्दी इंटरनेट पर भी बहुत सक्षम भाषा है। इससे संपूर्ण देश की राय एक ही मंच पर एक ही भाषा में व्यक्त होती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हिन्दी भाषियों को 'मूषक' आपस में जोड़ रहा है। जहां कई जाने-माने पत्रकार, कलाकार, भारतीय समाज के बुद्धिजीवी एवं प्रतिष्ठित लोग इससे जुड़े हैं, वहीं इसे सही मायनों में भारत के छोटे शहरों के निवासियों के द्वारा एक सहज और सरल सोशल नेटवर्क के रूप में पसंद किया जा रहा है। ध्यान में रहे कि भारत में प्रचलित लगभग सभी सोशल नेटवर्क- फेसबुक, ट्विटर, वाट्सएप इत्यादि विदेशी हैं और आज तक उनके सामने कोई सशक्त भारतीय विकल्प उभरकर सामने नहीं आ पाया था। स्वदेशी के अलावा 'मूषक' भारत के अन्य क्षेत्रिय भाषाओं पर भी जोर दे रहा है। मूषक हिंदी, गुजराती और मराठी भाषाओं में भी उपलब्ध है, कालांतर में इसे भारत की सभी क्षेत्रिय भाषाओं में उपलब्ध करने का प्रयास किया जा रहा है।

मूषक मात्र एक संदेशवाहक नहीं है बल्कि इसका प्रयास है कि यह सरकार और जनता के बीच संवाद का एक सरल, सुगम और सहज "जन भाषा" के रूप में साधन बने। मूषक का प्रयास है कि हिंदी भाषी लोगों के लिए इंटरनेट को और भी अधिक गणतांत्रिक और सरल बनाना ! मूषक लोगों की भाषा की विवशता को समाप्त करता है और उन्हें हिंदी में अपनी बात कहने का अवसर प्रदान करता है! मूषक कितना और आगे जा पाता है और भारत के डिजिटल भविष्य को लिखने में क्या भूमिका निभा पाता है, यह अब हम सभी भारतीयों पर निर्भर करता है।

मेरी मैहर यात्रा

– सुरेन्द्र कुमार,
आशुलिपिक

बात सन् 2003 की है जब मैं हाई स्कूल में था। मैं और मेरे तीन दोस्तों ने मैहर देवी दर्शन करने की योजना बनायी और हम चारो लोग मई के महीने में वाराणसी से मैहर के लिए रेल से रवाना हुए। हम सभी लोग पहली बार रेल की यात्रा कर रहे थे। हम मैहर देवी का दर्शन किए और वहां से निकल कर मैहर स्टेशन पर आए। शाम के करीब सात बज रहे थे और हमने यह योजना बनायी कि हम यहां से इलाहाबाद जाएंगे और संगम में स्नान करके फिर घर जाएंगे। फिर हम लोग मैहर से रेलगाड़ी में बैठ गए और खुशी–खुशी जाने लगे। जब हम रास्ते में संगम स्नान की बात कर रहे थे तो हम लोगों के पास खड़ा आदमी हमारी बातें सुन रहा था और बाद में हमें पता चला कि वह पुलिस वाला था। उसने कहा कि यह गाड़ी तो दिल्ली जा रही है आप लोग गलत गाड़ी पकड़ लिए हैं। इतना सुनते ही हमारे होश उड़ गए। समझ में नहीं आ रहा था क्या करें। फिर उसने कहा कि आप लोग रीवा से गाड़ी बदल लिजिएगा और इलाहाबाद पिछले गेट से उतर जाइएगा। हमनें ऐसा ही किया और भोर में 4 बजे इलाहाबाद पहुंच गए लेकिन इलाहाबाद का पिछला गेट पता न होने के कारण हम मुख्य द्वार से निकलने लगे तभी टिकट मास्टर ने हमें पकड़ लिया और टिकट दिखाने के लिए कहा। हमनें टिकट दिखाया लेकिन उसने कहा यह गाड़ी तो सुबह आने वाली है आप लोग इतनी जल्दी कैसे पहुंच गए। हमनें सब कुछ बता दिया तो उसने कहा ठीक है कुछ पैसे दो और जाओ। हमने करीब 500 रूपये दिये लेकिन वो नही माना और बड़े ऑफिसर को बुला दिया। अब तो और बुरा हो गया क्यों कि ये ऑफिसर नशे में था और कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था और 5000 रूपये मांग रहा था जो कि हमारे पास नहीं थे। उसने हमारा कैमरा ले लिया और एक पर्ची पर अपना नाम लिख के दिया और बोला कि अब यहां से अगली गाड़ी पकड़ के चले जाओ और कोई पूछे तो ये नाम दिखा देना। हमनें कैमरे के लिए काफी निवेदन किया लेकिन उसने एक न सुनी। और हम दुखी मन से गाड़ी में बैठ गये। रास्ते भर हम डरते हुए आ रहे थे कि कोई पकड़ न ले। फिर हम एक स्टेशन पहले यानि मंडुआडीह स्टेशन पर गाड़ी धीमी होने पर उतर गये और पीछे कि दीवार फांदकर चले गए। तब हमारी सांस में सांस आई और हमनें यह तय किया कि हम ये बात कभी किसी को नहीं बताएंगे और हमने ऐसा ही किया। आज तक ये सच्चाई किसी को पता नहीं है। अब जब हम उस घटना को याद करते हैं तो हंसी आ जाती है।

परिवार

– आकांक्षा पटेल

(पत्नीः श्री सुरेन्द्र कुमार, आशुलिपिक)

यह कहानी है एक छोटे से गॉव के एक लड़के कि जिसका नाम रवि है। वह बहुत ही परिश्रमी है। वह खेतों में काम करता है और पढ़ाई भी करता है। उसकी दो बहनें है और दो भाई है। माता–पिता खेती करते है और रवि कोचिंग पढ़ाकर घर में माता–पिता की मदद करता है। घर की माली हालत ठीक नहीं थी लेकिन पूरा परिवार खुशहाल था। धीरे–धीरे एक बहन की शादी हो जाती है और वह अपने घर चली जाती है।

अब दो भाइयों को पढ़ाने की जिम्मेदारी और एक बहन की शादी की जिम्मेदारी रवि के कन्धों पर आ जाती है क्यों कि खेती में बस घर के खाने के लिए होता है और अलग से कोई आमदनी नहीं है। अब रवि पहले से ज्यादा मेहनत करता है और 10 से 12 घंटे तक पढ़ाता है और नौकरी पाने के लिए अपनी भी पढ़ाई करता है। इसी बीच उसकी शादी हो जाती है और वह अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता है जिसका नाम सुधा है।

लेकिन बात तब बिगड़ जाती है जब उसकी पत्नी और घर के सदस्यों के बीच गलतफहमी हो जाती है। घर वालों को लगता है कि सुधा घमंड में रहती है क्यों कि वह शहर से है और सुधा को लगता है कि घर वाले अच्छे नहीं है। अब रवि को दोनों तरफ से संभालना पड़ता है। वह अपने माता– पिता और परिवार से बहुत प्रेम करता है और कभी भी माता–पिता के सवालों का जवाब नहीं देता है। वह अपनी पत्नी को बार–बार समझाता है कि घर वाले बुरे नहीं है क्यों कि जन्म से इनके साथ हूँ। बात बस इतनी सी थी कि घर वाले पुराने खयालात के थे और पत्नी थोड़े नए खयालात की थी। न तो परिवार वाले सुधा के अनुसार ढलना चाहते थे और न ही सुधा परिवार वालो की तरह होना चाहती थी। इतनी सी बात ने घर में कलह का माहौल पैदा कर दिया और आए दिन कुछ न कुछ होता रहता था। रवि अपनी पत्नी से प्रेम तो बहुत करता था लेकिन परिवार की जरूरतों के आगे उसकी जरूरतों को पूरा नहीं कर पाता था इसलिए उसकी पत्नी से भी नोंक–झोंक होती रहती थी।

करीब दो साल बाद रवि को सरकारी नौकरी मिल जाती है और वह दूसरे शहर चला जाता है। धीरे–धीरे मुसीबतें कुछ कम होती है और पत्नी भी अपने आप को परिवार के माहौल में ढाल लेती है और परिवार वाले भी सुधा को धीरे–धीरे समझने लगते है। शादी के चार साल बाद घर में एक छोटा सा मेहमान भी आ जाता है जिसने सबके बीच की दूरियां मिटा दी और अब रवि, सुधा और उसका बच्चा उसी शहर में रहते हैं जहॉ रवि की नौकरी लगी है। माता–पिता भी समय–समय पर आते रहते हैं बच्चों से मिलने के लिए और सुधा भी समय–समय पर जाती रहती है गॉव में महीने 2 महीने के लिए। रवि भी साल में 3 से 4 बार त्योहार मनाने गॉव चला जाता है। रवि की बस एक ही इच्छा है कि उसका तबादला पास के किसी शहर में हो जाय जहॉ वह अपने पूरे परिवार के साथ रह सके और अपने माता–पिता की सेवा कर सकें। रवि आज भी अपनी जरूरतों को सबसे अंत में पूरा करता है पहले परिवार की जरूरतों को पूरा करता है क्यों कि उसका मानना है कि परिवार खुश तो वह भी खुश।

गुरू और चेला

– पीटर चौधुरी
पुत्र – प्रियतोष चौधुरी,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

एक बड़ी सी नदी के किनारे में एक आश्रम था उसमें एक गुरू और उनका चेला रहता था। हर दिन बहुत सारे भक्त उसी आश्रम में आते थे और गुरू की बात सूनते थे। सभी भक्त आश्रम में अपने खाने–पीने की सामग्री भी लेकर आते थे। गुरू और चेले आश्रम के फल और मिले हुए भोजन की सामग्री से दिन गुजारते थे। गुरू और चेले साथ–साथ रहते थे। चेले गुरू की सेवा करते थे। गुरू अपने व्यवहार और ज्ञान से बहुत सारे भक्त को संतुष्ट करते थे। इसलिए लोग इनसे प्रेम करते थे। चेले हमेशा सोचते थे कि वही अपने गुरू के सबसे बड़े चेले हैं और गुरू सबसे ज्यादा उनको ही प्यार करते हैं। एक दिन मौका मिलते ही चेलों ने गुरू को अपने मन की बात बता दी। गुरू, चेले की यह बात सुनकर बहुत गंभीर हो गए और कुछ नहीं बोले। कुछ दिनों के बाद गुरू ने सभी चेलों को बुलाया और कहा कि तुम्हारे लिए एक काम है। चेलों ने गुरू की बात सुनकर कहा कि कौन सा काम करना होगा? गुरू ने तेल से भरा हुआ एक डिब्बा लाया और कहा तेल का डिब्बा लेकर तुम दूर के गाँव में जाओ और जो भक्त उस गाँव में रहते हैं उनके हाथों में तेल का डिब्बा दे आओ! लेकिन याद रहना, रास्ते में तेल न गिरे, नहीं तो अनर्थ हो जाएगा। चेले गुरू के हाथ से तेल का डिब्बा लेकर निकल पड़े और रास्ते में ध्यान रखा कि तेल न गिरे। अंधेरा छा गया। चेले गाँव में पहुँचे और भक्त को तेल का डिब्बा दिया। रात भर भक्त के अनुरोध पर चेले उसी गाँव में रूक गए। सुबह उठकर चेले वापस आश्रम आ गए। गुरू से मिले और कहा कि उन्होंने काम कर दिया है। गुरू भी चेले को देखकर खुश हो गए। गुरू ने पूछा, रास्ते में गुरू को कितने बार याद किया। चेले ने कहा कि उनका ध्यान तेल के डिब्बे पर था और वे गुरू को याद करना भूल गए। यह बात सुनकर गुरू कुछ नहीं कहे। फिर कुछ दिनों के बाद गुरू अपने चेलों को लेकर उसी गाँव में उसी भक्त के पास पहुँचे। भक्त बूढ़ा हो चुका था। गुरू को देखते ही भक्त दौड़ा आया और गुरू को प्रणाम किया। गुरू ने पूछा, कैसे हो भक्त? उसने कहा, गुरू की दया से ठीक हूँ। गुरू ने चेले को बताया, यह भक्त सुबह से शाम तक खेत में काम करता है। थोड़ा सा जो समय मिलता है उसमें गुरू को याद करता है। कभी गुरू को नहीं भूलता। लेकिन चेले उस दिन तेल के डिब्बे को लाते हुए गुरू का नाम लेना भूल गए। अब गुरू इसके बाद बूढ़े भक्त की ओर इशारा करते हुए चेले से कहा – अब बताओ मेरा प्यारा भक्त कौन है? चेले को गुरू की बात समझ में आ गई और माफी मांगते हुए चेले ने कहा – अब हम कभी भी गुरू को याद करना नहीं भूलेंगे।

डस्टबिन – स्वच्छता की निशान

– राकेश रंजन मिश्रा,
वरिष्ठ अनुवादक

समय होत बलवान है साथी
समझ सको तो समझो,
दीन–हीन, लाचार पड़ा था
अब तो हालत देखो!

न मैं कचरा, न मैं डब्बा,
नए दौर का बस एक सपना,
जागे बिन ही जगा गए, जब
पड़ा समाज पर मेरा पहरा।

कल तक मुझसे नफरत करते,
आज हुए करीब,
मुझ बिन सुनी सड़क–चौराहें
बना हूँ अब प्रतीक।

नहीं कोई परहेज करे अब
बिरले हाथ लगाते,
अब तो सभी रंग–रंग में,
स्वच्छता का निशान बताते।

शान बना मैं, मान बना मैं,
बोझ से उठ अभिमान बना,
स्वच्छ भारत का सपना लेकर
नवयुग का पहचान बना।

देवी गीत

– सुरेन्द्र कुमार,
आशुलिपिक

मइया के दर पे जाओ, तुम अपना भाग जगाओ,
मइया के चौखट पे तुम, जा के शीश झुकाओ,
ये मइया तो दुख को हरती है, भक्तों का मंगल करती है–2
मॉ के नौ दिन नवरात्र के आते है हर साल,
जगराते में माता का हम, करते है गुणगान–2
मइया है सबकी जननी, वो जाने सबकी करनी,
कुछ उससे ना छुप पाता, वो जाने जग की गाथा,
ये मइया तो दुख को हरती है, भक्तों का मंगल करती है–2
मॉ का दरबार का है सच्चा, सुन लो मेरी बात,
भर जाएगी झोली, जब जोड़ोगे तुम हाथ,
मइया है भाग्य विधाता, पूरी करती हर आशा,
दुखियों के दीन को जाने, वो सबको अपना माने,
ये मइया तो दुख को हरती है, भक्तों का मंगल करती है–2

जिंदगी की धूप–छाँव

– विकास कुमार,
डी.ई.ओ.

हमारे समाज का ढांचा कुछ ऐसा है, हम हमेशा अपनों के बीच रहते हैं। हमारे सोचने–समझने का दायरा इन्हीं की वजह से बनता–बिगड़ता है। हमारे इतिहास के शैली के अनुसार ''हमें चाहिए कि हम किसी भी रिश्ते को पूरी गरिमा के साथ आत्मसात करें वा भी बिना किसी उम्मीद और स्वार्थ के। अगर आपका रिश्ता और प्यार निःस्वार्थ है तो कोई वजह नहीं कि आगे चल कर कोई रिश्ता इतना बिगड़ जाए कि वो नफरत बन जाए।

अपने भीतर नफरत पालना, बदला लेने जैसी भवनाओं पर नियंत्रण पाया जा सकता है। जो हमारे परम्पराओं के चलते आ रहा है, 'प्यार पर कभी नफरत को हावी न होने दें। लगातार उन बातों को याद करें जब आप खुश थें, सकारात्मक थे और अपनी ऊर्जा का सही जगह इस्तेमाल करते थे। नकारात्मक ऊर्जा के नुकसान से बचने के लिए ध्यान, व्यायाम फायदेमंद साबित होते हैं। इसी तरह हमारे समाज में वर्षों से चलती आ रही प्रथाओं के अनुसार भी यही कहा गया है कि, स्वयं से प्यार करना सीखें। आप स्वयं जो भी हैं, आपसे अच्छा और कोई नहीं जानता। अपने आप से मोहब्बत करेंगे तो यह भी जान पाएंगे कि जो आपको चाहते हैं, उनके प्यार में कितनी गहराई है।

प्यार और नफरत के बीच का पड़ाव है क्षमा करना या क्षमा मांगना। तमाम मोटिवेशनल गुरू क्षमा के साथ दिन की शुरूआत करने को कहते हैं। जिंदगी में जा मिला है उसके लिए शुक्रगुजार रहिए और जो नहीं मिला उसका अफसोस मत कीजिए। माफ करने से अपने आप को हर तरह की नकारात्मक भावनाओं से मुक्त रख पाएंगे।

पर्यावरण

– मनीष कुमार,
लेखाकार

आज के युग में मनुष्य अपने सुख के लिए धरती माता के साथ बहुत अन्याय कर रहा है। यदि भविष्य में ऐसा ही चलता रहा तो बहुत जल्द मानव का अस्तित्व इतिहास बन कर रह जाएगा! तो आइए समय की मांग को समझते हुए पर्यावरण संरक्षण पर कविता के जरिये हम भी सब को जागरूक करने का छोटा सा प्रयास कर रहे हैं।

बदले हम तस्वीर जहाँ की
सुन्दर सा एक दृश्य बनायें,
संदेश ये हम सब तक फैलाएं
आओ पर्यावरण बचाएं!

फैल रहा है खुब प्रदूषण
काट रहा मानव जंगल–वन,
हवा हो रही है जहरीली,
कमजोर पड़ रहा सबका तन,
समय आ गया है कि मिलकर
हम–सब कोई कदम उठाएं
संदेश हम सब तक फैलाएं
आओ हम सब मिलकर पर्यावरण बचाएं!

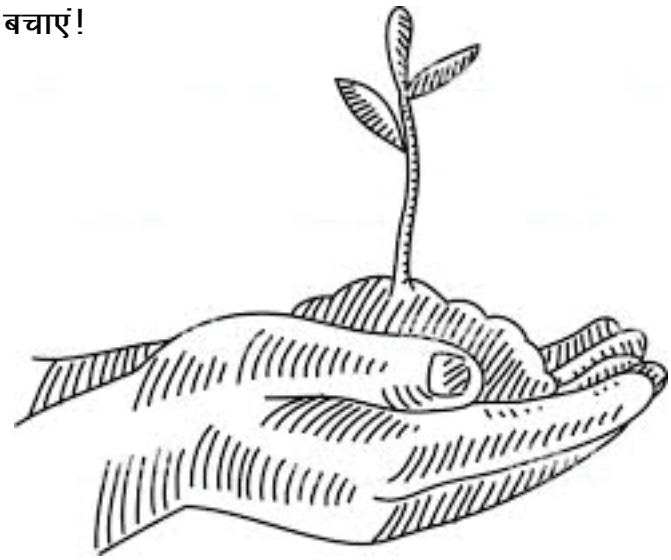

जनसंख्या विस्फोट

– अमित कुमार बर्मन
डी.ई.ओ.

जैसा कि हम सभी जानते हैं एक निश्चित समय अंतराल के अंदर जनसंख्या में हाने वाले परिवर्तन को हमें जनसंख्या वृद्धि कहते हैं। जब यह परिवर्तन अत्यधिक तीव्र गति से होती है तो इसे जनसंख्या विस्फोट कहते हैं। किसी भी देश के निर्माण में जनसंख्या या आबादी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः जनरहित देश या संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यहाँ तक कि देश का अस्तित्व भी जनसंख्या से ही है। एशिया महाद्वीप विश्व में सर्वाधिक घनी आबादी वाला महाद्वीप है जहाँ विश्व की लगभग 60 प्रतिशत आबादी निवास करती है क्योंकि इस महाद्वीप में कई देश ऐसे हैं जहाँ सर्वाधिक आबादी निवास करती है। उनमें से एक भारत है। आज भारत में जनसंख्या ने एक विकराल रूप धारण कर लिया है जो देश के लिए एक अभिशाप है जिससे देश में हर तरफ बेरोजगारी का माहौल है और सरकार इसके लिए जो भी योजनाएं लाती है या बनाती है, सभी असफल हो जाती है जिससे चारों ओर असंतोष का माहौल उत्पन्न होता है। अत्यधिक जनसंख्या के कुछ फायदे भी हैं, जैसे इससे काम करने वालों की कमी नहीं होती कम मजदूरी में काम करने वाले मजदूर आसानी से मिल जाते हैं जिससे प्रतियोगिता का वातावरण बना रहता है। लेकिन अत्यधिक जनसंख्या के बहुत से कुप्रभाव हैं, जैसे अधिक आबादी के लिए अधिक भोजन, आवास, जल, पोषाक तथा बच्चों के स्कूल, चिकित्सा सुविधा, स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराना एक गंभीर समस्या है। इसके और भी दूषपरिणाम हैं जैसे प्रतिव्यक्ति आय औसत आय से भी कम होना, भूमी पर अत्यधिक दबाव के कारण भूमी का अत्यधिक महंगा होना जिससे आज आजादी के सात दशक के बाद भी सभी को अपना मकान नसी नहीं है।अतः इनसे निपटने के लिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार जन–जन तक करना होगा तथा सरकार को परिवार नियोजन के फायदे जन–जन तक पहुँचाने की जरूरत है। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार को कड़े कानून लाने होंगे जिसका पालन सभी को सख्ती से करना होगा। जो इसका पालन नहीं करेगा उसे दंड स्वरूप कुछ समान्य अधिकारों से वंचित करना होगा और जो पालन करे उसे प्रोत्साहन की जरूरत है। इससे लोगों को भी एकमंच पर आने की जरूरत है तभी सम्मिलित प्रयास से इस महा जंजाल से मुक्ति संभव है।

"भारत के प्रति अनन्य निष्ठा रखने वाले सभी भारतीय एक हैं, फिर उनका मजहब, भाषा तथा प्रदेश कोई भी क्यों न हो।"

अटल बिहारी वाजपेयी

धरती से चंद्रमा से मंगल-भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की गगनचुंबी उपलब्धियां

श्रीमती शालिनी दहिया
कनिष्ठ अनुवादक

भारत के मिसाइल मैन व दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति श्री अबुल पाकिर ज़ैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम ने कहा था "हमें हार नहीं माननी चाहिए और समस्या को हमें हराने की अनुमति नहीं देनी चाहिए ।" उन्होंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए यह भी कहा था कि "सफलता तब है, जब आपके 'हस्ताक्षर' 'ऑटोग्राफ' में बदल जाएं ।"

<u>प्रथम अध्यायः</u> उनके इन्हीं प्रेरणादायकों वक्तव्यों को सिद्ध करते हुए भा.अं.अनु.सं. (इसरो) ने अपनी भूतपूर्व उपलब्धियों की भांति दिनांक 22 अक्तूबर, 2008 को सतीश धवन अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र, श्रीहरिकोटा से "चंद्रयान-प्रथम" को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित कर संपूर्ण विश्व में चौथा राष्ट्र बना । यह यान दिनांक 8 नवंबर, 2008 को चंद्रमा पहुंचने में सफल रहा । रेफ्रिजरेटर के आकार तथा 525 किलोग्राम भार के इस यान द्वारा भारत से 5 वैज्ञानिक पेलोड को चंद्रमा पर ले जाया गया था । इसने 100 किलोमीटर की ऊंचाई से चंद्रमा प्रभाव की जांच की और इसमें चंद्रमा पर पानी व बर्फ के साक्ष्य को प्रदान किया जिसकी संभावना की चर्चा वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक कर रहे थे किंतु भारत इसे साक्ष्यों सहित प्रमाणित करने में सफल रहा । इसके अतिरिक्त इसने चंद्रमा की सतह पर रेडियोधर्मी तत्वों की भी जांच की तथा चंद्रमा की सतह के उच्च-रिज़ॉल्यूशन मानचित्र भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान को प्रदान किए । दिनांक 29 अगस्त, 2009 को चंद्रमा की 3400 परिक्रमाएं करने के उपरांत, उच्च विकिरणों तथा विद्युत आपूर्ति की विफलता के कारण चंद्रयान-प्रथम के अंतरिक्ष यान से सभी संचार खो गए तथा इसरो ने इस मिशन की समाप्ति की घोषणा की । भले ही चंद्रयान-प्रथम अपने नियोजित समय से पूर्व समाप्त हो गया, तथापि इसने अपने निर्धारित लक्ष्य का 95% हासिल करने की अविश्वसनीय उपलब्धि प्राप्त की।

<u>द्वित्तीय अध्यायः</u> दिनांक 5 नवंबर, 2013 को "मंगलयान-प्रथम" के नाम से प्रसिद्ध इस यान का मंगल आर्बिटर मिशन (मॉम) द्वारा प्रक्षेपण किया गया और दिनांक 24 सितंबर, 2014 को इसने सफलतापूर्वक मंगल की कक्षा में प्रवेश किया । इस गौरवान्वित मौके पर देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा "हम कल्पनाओं की सीमा से परे चले गए हैं ।" संयुक्त राज्य अमरीका की यूरोपियन अंतरिक्ष संस्था, फ्रांस व सोवियत संघ के बाद यह सफलता प्राप्त करने वाला भारत संपूर्ण विश्व में चौथा तथा एशिया में प्रथम राष्ट्र बन गया । अपने इसी प्रयास में भारत से पूर्व, चीन व जापान असफल हो चुके थे ।

टाटा नैनो कार के आकार व लगभग 450 करोड़ रूपये में केवल 15 महीनों में बनकर तैयार होने वाला यह विश्व का सबसे सस्ता यान है । जबकि नासा के मावेन यान के कुल बजट का यह केवल दसवां हिस्सा है तथा इसके अतिरिक्त, अपने प्रथम प्रयास में ही सफलतापूर्वक प्रक्षेपित भी किया गया । मंगल ऑर्बिटर पहले धरती की कुछ परिक्रमाऐं करने के पश्चात् उचित रफ्तार पकड़ते ही मंगल की ओर धकेल दिया गया । यह मिशन, मंगल में धरती पर जीवन के लिए आवश्यक रसायन मीथेन गैस अर्थात "मार्श गैस" की खोज करने में मदद कर रहा है । मंगल की सतह पर पहले कभी मौजूद पानी जो अब वहां नहीं है, के कारणों की खोज भी यह यान कर रहा है ।

<u>तृतीय अध्यायः</u> दिनांक 22 जुलाई, 2019 को सतीश धवन अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र, श्रीहरिकोटा से जी.एस.एल.वी. एम.के.-3 द्वारा 3850 किलोग्राम का "चंद्रयान-द्वित्तीय" प्रक्षेपित किया गया तथा 14 अगस्त, 2019 को चंद्रमा की कक्षा में स्थापित भी हो गया । भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान की यह अब तक की सबसे महंगी परियोजना है । यह मिशन पहली बार चंद्रमा के दक्षिणी भाग की जांच कर रहा है । इससे पहले के सभी चंद्रमा मिशन केवल उसके उत्तरी भाग पर केंद्रित थे, जो कि दिखाई देने में सक्षम है किंतु चंद्रयान-द्वित्तीय जिस दक्षिणी भाग की जांच कर रहा है, वह इसके विपरीत अंधकारमय है । 978 करोड़ रूपये के बजट की लागत से तैयार यह यान इसरो के 13 तथा नासा के 1 पेलोड को चंद्रमा पर लेकर गया है । यह 54 दिनों का कार्यक्रम है, जिसके लिए चंद्रयान को 3.84 लाख किलोमीटर की दूरी तय करनी होगी । अपने निर्धारित समय से 23 दिन पहले यह चंद्रमा की कक्षा में स्थापित होना भी भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों की सफलता थी। चंद्रयान-द्वित्तीय का लैंडर विक्रम दिनांक 7 सितंबर, 2019 को देर रात 1:55 बजे चांद के दक्षिणी ध्रुव पर उतरेगा व सुबह 5:30 से 6:30 बजे के बीच प्रज्ञान विक्रम से बाहर आएगा ।

<u>भविष्य का ख़ाकाः</u>

1. ***<u>मंगलयान-2:</u>*** मंगलयान-1 की प्रथम प्रयास में सफलता व चंद्रयान-2 के प्रक्षेपण उपरांत, इसरो मंगल पर लैंड-रोवर उतारेगा । इस बार मंगल की न केवल परिक्रमा अपितु उस पर अनुसंधान व उसकी सतह, वातावरण, विकिरणों, तूफानों, तापमान का अध्ययन भी करेगा । संभवतः, इसे 2021-2022 में प्रक्षेपित किया जा सकता है तथा यह भी संभावना है कि फ्रांस इसमें भारत की सहायता करे ।

2. ***गगनयानः*** अंतरिक्ष में मनुष्यों की वैज्ञानिक यात्रा इसरो की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है व इसके लिए 3 व्यक्तियों को 7 दिनों के लिए अंतरिक्ष में भेजेगा। उम्मीद है कि यह मिशन 2021 तक पूरा हो जाएगा। इसके पहले दिसंबर, 2020 और जुलाई, 2021 में मानवरहित गगनयान का प्रक्षेपण किया जाएगा ताकि अंतिम मिशन की सुरक्षा और सटीकता की सुनिश्चित की जा सके। अनुमानतः 10 हजार करोड़ रूपये की इस परियोजना में भारतीय वैज्ञानिकों की सहायता हेतु रूसी वैज्ञानिकों से प्रशिक्षण व सहायता ली जाएगी। इससे पूर्व रूस, अमरीका व चीन ही ऐसी सफलता प्राप्त कर पाए हैं।

3. ***आदित्य-L1:*** इसरो पहली बार 2019-20 के अंत तक सूर्य के विभिन्न आयामों की जांच करेगा व इसके लिए 400 किलोग्राम का सोलर प्रोब मिशन आदित्य-L1 छोड़ेगा, जो कि धरती से 15 लाख किलोमीटर ऊपर स्थित हैलो ऑर्बिट में लग्रांज-1 बिंदु के पास स्थापित किया जाएगा। इसमें केवल एक पेलोड होगा जो सूर्य के कोरोना, सौर लपटों, तापमान, चुंबकीय क्षेत्र सहित अन्य तथ्यों व उनसे पृथ्वी पर होने वाले प्रभावों की जांच करेगा। इस मिशन को 2012-13 में आरंभ करने की योजना थी किंतु तकनीकी कारणों से इसमें देरी हो रही है।

4. ***निसारः*** दुनिया के सबसे महंगे अर्थ ऑब्जरवेशन उपग्रह की इस परियोजना के सफल होने पर इसरो की संपूर्ण विश्व में वाहवाही होगी। इसका पूरा नाम 'नासा-इसरो सिंथेटिक अप्रेचर राडार' है। इसे नासा और इसरो मिलकर पूरा करेंगें व इसकी कुल लागत तकरीबन 10 हजार करोड़ रूपये होगी। इसे जी.एस.एल.वी. एम.के.-2 रॉकेट से प्रक्षेपित किया जाएगा।

5. ***शुक्रयानः*** विश्व में पाँचवा देश होगा जो इंडियन विनसियन ऑरबिटर मिशन अर्थात शुक्रयान द्वारा इसरो शुक्र ग्रह के वातावरण का अध्ययन करेगा। यह शुक्र ग्रह के सबसे निकट 500 किलोमीटर तथा सबसे दूर 60,000 की कक्षा में उसके चारों ओर चक्कर लगाएगा। यह ग्रह के वातावरण का अनुसंधान तथा उसकी सतह पर जल, खनिज व ऑक्सीजन की जांच करेगा। संभवतः, वर्ष 2023 के अंत तक यह आरंभ किया जा सकता है।

{साभारः इंटरनेट से प्राप्त सामग्री}

"राजभाषा के रूप में हिंदी देश की एकता में अधिक सहायक होगी। इस पर दो मत हो ही नहीं सकते।"

पं. जवाहर लाल नेहरू

अंतर्बोध

– आनन्द कौशल,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

अमर एक शांत स्वभाव वाला व्यक्ति है। वह कभी किसी को वैसी कोई भी चीज़ के लिए ना नहीं कहता जो उसकी क्षमता के अंतर्गत हो। दोस्तों और परिचित लोगों का क्या कहना, वह तो अपरिचित जैसा कभी देखा ही ना हो, उन्हें भी सहायता की आवश्यकता हो तो हमेशा तत्पर रहता है। जिसके लिए वह अपना परिवार, संबंधियों, दोस्तों और परिचित लोगों के बीच बहुत प्रसिद्ध है। कभी तो ऐसा भी होता है कि उसक जेब में केवल सौ रूपये हों तथा किसी को सौ रूपये की जरूरत हो और उससे मांग रहा हो तो वह दे देता है। उसे यह भी ख्याल नहीं रहता है कि उसका अपना क्या होगा। अगर वह व्यक्ति, जिसे अमर पैसा दे रहा है, पूछता है कि आपको भी तो पैसों की जरूरत पड़ सकती है? अमर कह देता – 'तुम अपना काम बना लो। मुझे देखने वाल भी है।'

अमर अपना स्वास्थ्य और शरीर, दोनों का भी अच्छा ख्याल रखता है। नियम निष्ठा से व्यायाम और प्रभात को शैर के लिए निकलना मानो उसकी आदत सी बन गई हो। कदाचित यही कारण है कि वह हमेशा कोई भी चीज को प्रत्यक्ष रूप से स्वीकारता ळै। ईश्वर के प्रति उसकी निष्ठा उतनी ही है। उसे सदा ऐसा प्रतीत होता, कि मानो उसके जीवन में आज तक जो भी अच्छे–अच्छे अनुभव हुए हैं या कोई सफलता प्राप्त हुई है तो वह सब ईश्वर की ही कृपा है। वह जब–जब ईश्वर की प्रार्थना करता है तो अपने लिए कुछ नहीं मांगता। वह मन ही मन यह सोंचता कि ईश्वर ने उसे सब कुछ तो बिन मांगे ही दे रखा है तो फिर आने लिए क्या मांगना है। वह भगवान से भी औरों के लिए ही मांगता रहता है।

प्रतिदिन के भांति आज भी वह चार बजकर पैंतालिस मीनट पर बिस्तर से बाहर निकलता है। शैर संबंधी अपने पहनाव के बाद निकल पड़ता है। रास्ते पर पहुँचने के बाद वह धीमी गति से दौड़ना शुरू करता है। प्रातःकाल में होने वाले प्रकृति के हर उस गतिविधि का भरपुर आनन्द लेते हुए वह क्रमशः आगे बढ़ता रहता है। विभिन्न प्रकार के चिड़ियों की चह–चहावट, जंगल और फूलों से निकलने वाली वह मंद सा सुगंध, विभिन्न प्रकार और आकार वाले विशाल एवं लघु वृक्षों के पत्तों से निकलते वह धीमी–धीमी ध्वनियां, सरिता की वह कलकलाहट मानो प्रकृति की हर एक रचना एक दूसरे का अभिनन्दन कर रही है और उनमें से होने वाली हर वह ध्वनी एक–दूसरे से मिलकर पूरे वातावरण को संगीतमय बना रही हो। यह सब अमर के जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। प्रकृति के इस रंग को देख अमर सदैव प्रफुल्लित हो उठता है। वह मन ही मन प्रकृति की रचना की प्रशंसा करते हुए सघनता पूर्वक एक ही गति से आगे बढ़ता जाता है। उसे पता ही नहीं चलता, वह कब मंदिर पहुँच जाता है। वह अपने–आप से कह पड़ता – 'यह क्या, मैंने तो सोंचा ही न था कि आज मैं मंदिर आऊँगा? फिर सोंचता है – 'चलो, कोई बात नहीं, भगवान का बुलावा है। इसमें हम मनुष्य का क्या जोर? मंदिर पहाड़ी पर्श्व पर बनी सुन्दर और प्राचीन कला का एक ऐसा रूप है जिसे देख किसी का भी मन मुग्ध हो जाए। मंदिन

के प्रांगण को स्पर्श करते हुए एक छोटी नदी की प्रवाहित होती है। नदी की जल प्रवाह से निरंतर होने वाली वह आवाज कोई शास्त्रीय संगीत के धुन से कम नहीं। उस स्थल का प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन तो कोई दिग्कज कवि ही कर सकता है।

अमर सोंचता है, जब मंदिन पहुँच ही चुंका हूँ तो ईश्वर का दर्शन भी हो जाए! अपना जूता उतार कर मुँह हाथ धोने के लिए नदी के जल में अपना पैर उतारता है। अमर का पैर नही के उस पावन तथा उस शीतल जल को छुते ही उस शरीर में एक शीतल सा लहर उमड़ पड़ता है जिससे उसे दौड़ने से होने वाली थकान क्षण भर में दूर हो जाती है। वह मुँह–हाथ धो–कर मंदिर के द्वार पर टंगी घंटी बजाकर अंदर प्रवेश करता है और अपने दोनों हाथ जोड़े आँखें मुंदकर ईश्वर से प्रार्थना करता है –

'हे भगवान, सारे संसार की रक्षा करना।
भगवान मेरे माता–पिता का ख्याल रखना।
उन्हें एक–दूसरे से कभी न अलग करना।
भगवान सारे संसार की रक्षा करना।
भगवान संसार में जितने भी पिड़ित लोग हैं,
चाहे वे शारीरिक या मानसिक रूप से पिड़ित हो,
चाहे वे शिशु, बालक, जवान, अधेड़ उम्र के या वृध हो,
उनकी पिड़ा दूर कर दो भगवान।
भगवान, सारे संसार की रक्षा करना।

संसार में और भी कई ऐसे लोग हैं भगवान,
जो कुमार्ग पे चलकर, औरों के दुखों का कारण बने हुए हैं।
उनका मार्गदर्शन कर भगवान,
उन्हें आत्म शक्ति दे भगवान,
ताकि वे कुमार्ग को छोड़,
भले मार्ग पर चलें।
अपना जीवन, विश्व कल्याण में लगा सके,
और इस प्रकार विश्व में शांति और खुशहाली का माहौल पैदा हो।
हे भगवान, सारे संसार की रक्षा करना।
हे भगवान, मेरी बच्ची का मार्गदर्शन कर,
उसे आत्म विश्वास दे,
उसे आत्म शक्ति दे,
ताकि वह अपने जीवन में कुछ ऐसा कार्य करे,
जो सारे मानव जाति के कल्याण के लिए हो, भगवान।
भगवान, सारे संसार की रक्षा करना।

हे भगवान, मेरा यह जीवन,

तेरी ही देन है,
इसमें तुम्हारी ही इच्छा पूर्ण हो,
मुझे उसी में खुशी है, भगवान।
भगवान, सारे संसार की रक्षा करना।
ऊँ..... ऊँ..... ऊँ

प्रार्थना कर जब वह अपना, आँखें खोलता है तो उसे एक अभूतपूर्व शांति का आभाष होता है। ऐसा बोध उसे पहले कभी नहीं हुआ था। वह अचंभित होता है। किंतु उसी मुद्रा में वह मंदिर से घंटी बजाते हुए बाहर नकलता है और अपने घर की ओर चलता है।

घर पहुँचकर, क्योंकि उसकी पत्नी रोज के भांति पूजा के लिए तैयारियां कर रही होती है। अपने लिए लाल चाय बनाकर एक बिस्कुट के साथ बरामदे में बैठ, घर के बगल वाले शिव मंदिर की ओर देखते हुए चाय का आनन्द लेने लगता है। मन ही मन आजकल वह मंदिर में होने वाली व सुखद अनुभव का स्मरण भी करता है। आज वह न खुश है न ही दुखी है, आज उसके मन में एक अलग प्रकार की शांति है जिसका वर्णन वह स्वयं भी नहीं कर पा रहा है।

चाय पीने के बाद, वह घर के काम में लग जाता है। कई दिनों से उसके घर के किनारे पर लगी बांस से बना बेड़ा जगह–जगह से टूट पड़ा था। आज रविवार होने के कारण अमर का कार्यालय बंद था तो उसने पिछले ही दिन दो लंबे–लंबे बांस बेड़ा की मरम्मत के लिए मंगवा कर रखा था। वह अंदर से दाब मंगाकर बांस को बेड़ा के हिसाब से काटना शुरू करता है। वह अपने ही धुन में बांस काट रहा था। बांस हरा और कच्चा था। यह देख उसके मन में एक अजीब ख्याल आता है और मन ही मन कहता है–''इस बांस का भी क्या कहना, आज मैं इसका इस्तेमाल अपने घर को घेरने में कर रहा हूँ और कल अगर मैं न रहा तो इसी बांस में बांधकर मेरे शव को अंतिम संस्कार के लिए श्मशान ले जाया जाएगा।'' यह सोचते हुए अभी वह अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया था कि तभी उसकी नजर बाहर रास्ते पर गई और हांफते–हांफते दरवाजे पर आती हुई बसेवा पर पड़ती है। अमर कुछ समझ नहीं पाता है और बसेवा को देखता ही रह जाता है। बसेवा दरवाजा खोलती है और कहती है – ''भैया.....भैया.....आपके घर से फोन आया था।

तो ?

बसेवा के चेहरे का रंग फिका है और वह बोल पड़ती है– ''भैया आपके पिताजी नहीं रहे।''

अमर अवाक रह जाता है। वह कुछ बोल नहीं पाता है। उसके मन में फिर से विचार दौड़ने लगता है – ''तो वह सब इसके लिए था। भगवान मुझे इस दुखत समाचार के लिए तैयार कर रहे थे।

यादों का असर

– नरेश कुमार यादव,
डी.ई.ओ.

आँखों का ये कसर हो गया,
उम्र का ये असर हो गया।

बात पर बात खुल ही गई,
आज फिर से वो चली ही गई।

आँख से जमकर बारिश हुई,
साफ दिल था, जहर हो गई।

खबर पूछता कहाँ कोई अब
दिल भी अपना शहर हो गया।

अब राह चलना भी मुश्किल हो गया,
क्योंकि राह भी अब डगर हो गया।

साथ में थे तो स्वर भी सुरीला था,
अब वो भी लगता है बेअसर हो गया।

कोई नहीं फिर भी मैं अकेले कहाँ,
क्योंकि अब गज़ल ही मेरा हमसफर हो गया।

स्मृतियाँ

– कुमारी सरिता रानी,
बहन–नरेश कुमार यादव, डी.ई.ओ.

यादों की गिलहरियाँ
जब कुरेदती हैं स्मृतियों का पटल।

याद आती है माँ की लोरियाँ
और पापा की वो थपकियाँ।

हो जाती हैं आँखें नम
याद आती है जब वो बचपन।

जब अभिलाषा चाँद पर जाने की थी,
पर दिल तितली पर ही मचलता था।

सपने की तस्वीर नहीं थी
खोने–पाने का हिसाब नहीं था।

कागज की कश्ती थी
नदी का किनारा था।

माँ कहानी थी,
परियों का फसाना था।

समय का महत्व

– अमित कुमार बर्मन,
डी.ई.ओ.

जैसा कि हम सभी जानते हैं वक्त उस पल/क्षण को कहते हैं जिसे सभी लोग देखते हैं, समझते हैं और महसूस भी करते हैं पर फिर भी अपने जीवन की आलस्य के कारण या दिशाविहीन होने के कारण वक्त को समझने में असमर्थ हो जाते हैं। जिसका परिणाम उन्हें तत्काल तो समझ में नहीं आता है पर जब आता है तब तक बहुत देर हो जाती है। जिससे उनकी प्रगति में व्यावधान उत्पन्न होता है और वे लोग जीवन में सफल नहीं हो पाते। समय की तुलना हम धन से नहीं कर सकते क्योंकि यह संसार में सभी चीजों से अधिक मूल्यवान है समय मनुष्य का सबसे बड़ा खजाना है। संसार का वजूद भी समय से है और जीवन और जीवन भी। वक्त है, वक्त निरंतर अपनी समान्य गति से चलता रहता है, वक्त निरंतर अपनी समान्य गति से चलता रहता है। यह किसी में भेद भी नहीं करता चाहे वह अमीर हो या गरीब, ऊँचा हो या नीचा, गोरा हो या काला सभी को समान रूप से अवसर प्रदान करता है और जिसने समय के हर क्षण का सदुपयोग किया है वह व्यक्ति उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है

मंदी की मार

– सुभ्रांषू शेखर,
(गौतम वर्मा, डी.ई.ओ.)

मंद–मंद उद्योग चल रहे,
सोने में उछाल है आया।
ट्रक हो या हो कार स्कूटर,
बिक्री की धीमी चाल में आया।

एयरवेज हैं बंद हो रहे,
बिस्किट पर भी घाटा मंडराया।
युवा खो रहे हैं नौकरियां,
रोजगार ने रिवर्स–गियर दबाया।

सुना है डॉलर और रूपये के,
रिश्तों में भूचाल है आया।

मंगल पर पहुंचेगी हिंदी

-- पुरूषोत्तम गिरि,

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

पूरे विश्व में हिंदी बोली और समझी जा रही है। लेकिन आने वाले कुछ वर्षों में अपनी हिंदी पृथ्वी से होते हुए अंतरिक्ष के रास्ते मंगल ग्रह पर भी पहुंचने की तैयारी कर रही है। हिंदी मंगल ग्रह पर रांची की रश्मि रोबोट के माध्यम से पहुंचेगी। वैसे तो हिंदी विश्व के सभी मंचों पर सुशोभित है। रांची की रश्मि दुनिया की पहली हिंदी बोलने वाली रोबोट है। अब यह रश्मि रोबोट इसरो के महत्वाकांक्षी परियोजना मंगल मिशन पर भी जाने वाली है। इस रश्मि रोबोट की सबसे खास बात यह है कि इसे किसी वैज्ञानिक ने नहीं बल्कि एक रांची के एमबीए स्नातक ने बनाया है। यह पूरी तरह से स्वदेशी रोबोट है। यह रश्मि रोबोट हिंदी बोलने के साथ- साथ भोजपुरी भी जानती है और बोलती है। इसके अलावा अंग्रेजी और मराठी भाषाओं को भी जानती है। रश्मि रोबोट भावनाओं को भी समझती है और ईश्वर पर भी विश्वास करती है। चंद्रयान मिशन के बाद अब मंगल मिशन पर रांची का नाम जुड़ने वाला है। मंगल मिशन पर यात्री के तौर पर रश्मि रोबोट को भी अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी हो रही है। रश्मि रोबोट की बुद्धिमत्ता को जांचने और परखने के लिए इसरो के वैज्ञानिक रांची आए थे। इसरो के वैज्ञानिकों ने रश्मि रोबोट की संभावनाओं और तकनीक पर चर्चा की। वैज्ञानिकों ने विभिन्न अंतरिक्ष परियोजनाओं में मानव पर होने वाले असर को साझा किया। इसके अलावा इसरो के वैज्ञानिकों ने रश्मि रोबोट से बातचीत कर उसकी काबलियत को परखा और संतुष्टि जाहिर की। रश्मि रोबोट ने अपनी क्षमता से इसरो के वैज्ञानिकों को बहुत ही प्रभावित किया। इस रोबोट में स्मार्ट इंटेलिजेंस का भी बखूबी प्रयोग किया गया है। इसमें स्मार्ट इंटेलिजेंस और विजुअल डाटा के साथ चेहरों को भी पहचानने की क्षमता भी विकसित की गई है। साथ ही साथ रश्मि रोबोट में डाले गए प्रोग्राम की

वजह से मानवीय संवेदनाओं को समझने की खासियत भी उसमें विकसित की गई है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के इंजिनियरों ने रश्मि रोबोट की खूब प्रशंसा की है। इसके अलावा विभिन्न तकनीकी संस्थानों में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में भी रश्मि रोबोट को आमंत्रित किया जा रहा है। इसरो के वैज्ञानिकों के अनुसार रश्मि रोबोट मंगल मिशन पर जाएगी। इस रोबोट को रांची के श्री रंजीत श्रीवास्तव ने बनाया है। उनके अनुसार यह दुनिया की सबसे तेज बनने वाली रोबोट है। भारत के मशहूर फिल्म अभिनेता रजनीकांत की फिल्म रोबोट से प्रेरित और प्रभावित होकर श्री रंजीत श्रीवास्तव ने रश्मि रोबोट को तैयार किया। इसे बनाने में लगभग दो वर्षों का समय लगा। किसी भी क्षेत्र से प्रश्न पूछने पर रश्मि रोबोट अविलंब ही उसका जवाब देती है। पूरी दुनिया के लिए आने वाला समय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ - साथ रोबोटिक्स का ही है। भारत के रांची शहर में निर्मित पूर्ण रूप से स्वदेशी रश्मि रोबोट के द्वारा हमारी हिंदी भी अंतरिक्ष में पहुंचेगी और मंगल ग्रह की लाल भूमि पर भारतीय रोबोट रश्मि के कदम पहुंचते ही हमारी हिंदी भाषा भी मंगल ग्रह पर पहुंच जाएगी। जब मंगल ग्रह पर पहुंच कर रश्मि रोबोट हिंदी में बातें करेगी तो हिंदी के साथ - साथ हम सभी भारतीयों के लिए वह समय यादगार बन जाएगा और हिंदी साहित्य के इतिहास में हिंदी की पृथ्वी से अंतरिक्ष तक का सफर सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो जाएगा।

हिम्मत न हारो

– चन्दन कुमार
(भाई – चन्द्रशेखर कुमार, डी.ई.ओ.)

जब कोई काम बिगड़ जाए,
जैसा कि कभी–कभी होगा
जब रास्ता सिर्फ चढ़ाई का ही दिखता हो
जब पैसे कम और कर्ज ज्यादा हो
जब मुस्कुराहट की इच्छा आह बने,
जब चिंताएं दबा रही हों
तो सुस्ता लो, लेकिन हिम्मत न हारो
भुल–भुलैया है ये जीवन
पगडंडियां जिसकी हमें पार करनी है
कई असफल तब लौट गए
पार होते गए जो आगे बढ़ते गए
धीमी रफ्तार तो क्या
मंजिल को एक दिन पाओगे!
सफलता छिपी असफलता में ही
जैसे शंका के बादल में आशा की चमक
नाप सकोगे क्या इतनी दूरी
दूर दिखती है लेकिन मुमकिन है यह नजदीक हो
डटे रहो चाहे कितनी भी मुश्किल हो
चाहे हालात जितने भी बुरे हो
लेकिन हिम्मत न हारो, डटे रहो।

गर्भ में मुझे मत मारो

– सोनी कुमारी
(पत्नी–चन्द्रशेखर कुमार)

गर्भ में मुझे मत मारो
मुझसे नफरत मत करो माँ–पा
नौ माह मुझे पास रख लो ना
फिर किसी दर पर छोड़ देना
पर मुझे मत मारो माँ–पा!

ऊँगली पकड़ चलना
आपका सहारा बनना
इस दुनिया में जीना
आपकी बेटी कहलाना
चाहती हूँ मैं माँ–पा पर
गर्भ में मुझे मत मारो
मुझसे नफरत मत करो माँ–पा!

माँ आप भी तो किसी बेटी की बेटी हो
'पा' आप भी तो किसी बेटी के बेटे हो
तो मैं आपकी बेटी क्यों नहीं?
रहने दो अब जीने दो हमें अब
बदल दो इतिहास माँ–पा' अब
गर्भ में मुझे मत मारो
मुझसे नफरत मत करो माँ–पा'!

समय का महत्व

– क्रिस राज देब

समय धन से भी ज्यादा कीमती है क्योंकि यदि धन को खर्च कर दिया जाए तो वह वापस प्राप्त किया जा सकता है। हालांकि, यदि हम एक बार समय को गंवा देते हैं तो इसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते हैं। समय के बारे में एक सामान्य कहावत है कि, ''समय और ज्वार–भाटा कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं।'' यह बिल्कुल पृथ्वी पर जीवन का होना सत्य है। समय बिना किसी रूकावट के निरंतर चलता रहता है। यह कभी किसी की प्रतिक्षा नहीं करता है।

इसलिए, हमें जीवन के किसी भी दौर में कभी भी आने कीमती समय को बिना किसी उद्देश्य और अर्थ के व्यर्थ नहीं करना चाहिए। हमें हमेशा समय के महत्व को समझना चाहिए और उसी के अनुसार इसे सकानात्मक ढंग से कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसका प्रयोग करना चाहिए। हमें इससे निरंतर कुछ ना कुछ सीखते रहना चाहिए। यदि यह बिना किसी रूकावट के चलता रहता है, तो फिर हम ऐसा क्यों नहीं करे सकते?

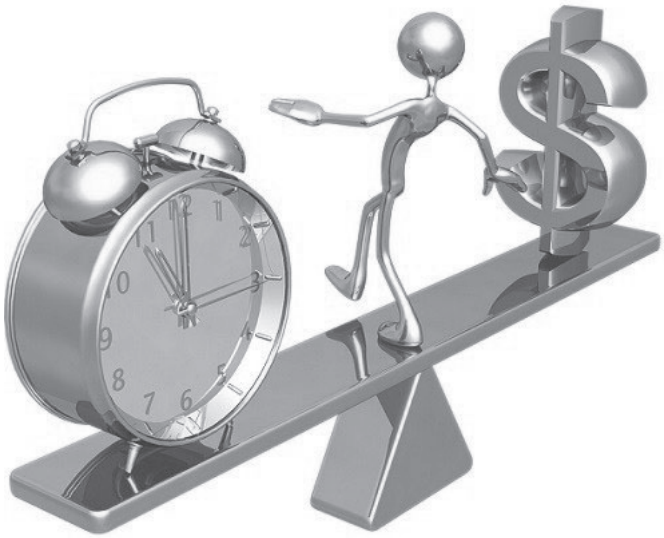

बस एक कदम और

– चन्द्रशेखर कुमार,

डी.ई.ओ.

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा

बस एक नजर और इस बार इशारा होगा!

अम्बर के नीचे उस बदली के पीछे कोई तो किरण होगा,

इस अंधकार से लड़ने को कोई तो किरण होगी।

बस एक पहर और इस बार उजाला होगा।

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।

जो लक्ष्य को भेदे वो कहीं तो तीर होगा

इस तपती भूमी में कहीं तो नीर होगा।

बस एक प्रयास और अब लक्ष्य हमारा होगा।

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।

जो मंजिल तक पहुँचे वो कोई तो राह होगी

अपने मन को टटोलो, कोई तो चाह होगी।

जो मंजिल तक पहुँचे वो कदम हमारा होगा।

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।

बस एक नजर और इस बार इशारा होगा।

मन के हारे हार है

– क्रिश राज देब

मन की गति आकाश की गति से भी तीव्र होती है। कहने का अभिप्राय यह है कि मन एक विषय से दूसरे वषय पर बहुत जल्दी बदल जाता है। लेकिन यह कोई समस्या नहीं है, क्योंकि अस्थिरता तो मन का स्वभाव है जिसे आप रोक नहीं सकतें। लेकिन आप अपनी मन की करतूतों पर नजर जरूर रखें क्योंकि यही आपके कर्मों का रूप धरते हैं।

मन ही वह बलवान तत्व है जिसे शरीर के सब अंगों, हाथ, पैर, नाक–कान आदि तथा जड़ चेतन सभी इन्द्रियों का राजा और प्रशासक स्वीकार किया गया है। हम या हमारी इन्द्रियाँ जो कुछ भी करती–कहती हैं, उन्हें करने–कहनें का इरादा या विचार पहले मन ही में बनता है। उसके बाद, उसकी प्रेरणा से अन्य इन्द्रियां इच्छित कार्य की ओर सक्रिय हुआ करती हैं। अच्छा–बुरा जो कुछ भी होता है या किया जाता है वह सब मन की इच्छा और प्रेरणा से हो पता है।

उन को जितना बलवान अथवा ताकतवर समझा जाता है उतना ही इसे चंचल, जागरूक और चेतन अंग भी माना जाता है। तभी तो तब मन में शक्ति, उत्साह और उमंग होता है तो शरीर भी तेजी से कार्य करता है तथा जब मन उत्साहित होता है तो दुर्बलता का करण बनता है।

मातृ दिवस

— मधुश्री देब

मातृ दिवस मनाने की शुरूआत सर्वप्रथम ग्रीस देश में हुई थी, जहाँ देवताओं की माँ को पूजने का चलन शुरू हुआ था। इसके बाद इसे त्योहार की तरह मनाया जाने लगा। हर माँ अपने बच्चों के प्रति जीवन भर समर्पित होती है। माँ के त्याग की गहराई को मापना भी संभव नहीं है और न ही उनके एहसानों को चुका पाना। लेकिन उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता को प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

माँ के प्रति भावों को व्यक्त करने के उद्देश्य से मातृ दिवस मनाया जाता है। यह दिन विशेष रूप से माँ के लिए समर्पित है। इस दिन को दुनिया भर में लोग अपने तरीके से मनाते हैं। कहीं पर माँ के लिए पार्टी का आयोजन होता है तो कहीं उन्हें उपहार और शुभकामनाएं दी जाती हैं। कहीं पर पूजा अर्चना तो कुछ लोग माँ के प्रति अपनी भावनाएं लिखकर जताते हैं। इस दिन को मनाने का तरीका कोई भी हो, लेकिन बच्चों में माँ के प्रति प्रेम और इस दिन के प्रति उत्साह चरम पर होना है।

हिन्दी

— मनीष कुमार,
लेखाकार

जन—गण—मन की भाषा हिन्दी,
मेहनतकश की भाषा हिन्दी!
देश जोड़ती बिना थके जो,
मेरे भारत की भाषा हिन्दी।
मन को बांधे, रौनक लाए,
खुशियों की परिभाषा हिन्दी!
संस्कारों को नित्य सहेजे
भारत की अभिलाषा हिन्दी।
धन्य भारत, जन—गण भारत,
जिसके तट गंगा सी हिन्दी।
हृदय प्रफुल्लित, मस्तक ऊँचा,
देख शिखर पर गर्वित हिन्दी।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में योगदान हेतु एक अपील

विक्रमजीत घोष,

सहायक लेखा अधिकारी

इंटरनेट पर उपलब्ध सूचनाओं से यह पता चला है कि जनवरी 1948 में पाकिस्तान से विस्थापितों की सहातार्थ सार्वजनिक योगदान के साथ राष्ट्रीय राहत कोष के संसाधनों का उपयोग अब मुख्यतः बाढ़, तुफानी चक्रवात और भूकंप आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित परिवारों को और बड़ी दुर्घटनाओं या दंगों के पीड़ितों को तत्काल राहत देने के लिए किया जाता है। हृदय की सर्जरी, किडनी प्रत्यारोपण, कैंसर उपचार और एसिड अटैक आदि जैसे चिकित्सा उपचार के खर्चों पर काबू पाने हेतु प्रधान मंत्री के राष्ट्रीय राहत कोष से सहायता प्रदान की जाती है। यह कोष पूरी तरह से सार्वजनिक योगदान से तैयार होता है और बजट आदि से सहायता नहीं मिलती। फंड के कॉर्पस को विभिन्न रूपों में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों और अन्य एजेन्सियों के साथ निवेष किया जाता है। इसका संवितरण प्रधान मंत्री के अनुमोदन से होता है। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष का गठन संसद द्वारा नहीं किया गया है। इस फंड को आयकर अधिनियम के अंतर्गत ट्रस्ट के रू॰ में मान्यता प्राप्त है और इसे राष्ट्रीय कारणों के लिए प्रधान मंत्री या अन्य मनोनित प्रतिनिधियों द्वारा प्रबंधित किया जाता है। यह कोष प्रधान मंत्री कार्यालय, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली से संचालित होता है और इसके लिए लाईसेंस फी नहीं दिया जाता। इसे आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 10 और 139 के तहत रिटर्न हेतु छूट दी जाती है। इस कोष के लिए किए गए योगदान आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80 (जी) के तहत योग्य आय से 100 प्रतिशत कटौती के लिए अधिसूचित है। इस कोष के अध्यक्ष प्रधान मंत्री ही होते हैं और उन्हें अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है।

यह कोष केवल स्वैच्कि दान स्वीकार करता है। सशर्त योगदान भी नहीं स्वीकारा जाता है। यदि कोई अभिदाता राष्ट्रीय राहत कोष संग्रह बैंकों में सीधे दान करता है तो उसे सलाह दी जाती है कि वे अपने पते के साथ लेनदेन का पूर्ण विवरण प्रदान करे। दानकर्ता नकद/चेक/डिमांड ड्राफ्ट या ऑनलाईन भी भुगतान कर सकता है। इंटरनेट से प्राप्त सूचना के आधार पर इस कोष हेतु वर्ष वार स्वैच्छिक योगदान निम्नलिखित हैः

वर्ष	स्वैच्छिक योगदान (करोड़ में)
2012—2013	17.79
2013—2014	375.97
2014—2015	608.68
2015—2016	497.47
2016—2017	244.98
2018—2019	236.63

देश की जनसंख्या 130 करोड़ है, जबकि देखा जाए तो 9 वर्षो का औसत योगदान 230 करोड़ है यानी प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति का योगदान रू0 2/— से भी कम है। देश की 100 प्रतिशत आबादी का प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में योगदान संभव नहीं पर यदि ऐसी व्यवहार्यता हो कि रू0 1/— प्रतिदिन के हिसाब से राशि जमा की जा सके तो 230 करोड़ की तुलना में 36,500/— होगा जिसे न सिर्फ प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सहायता के लिए बल्कि उन जवानों के परिवार की भी मदद की जा सकेगी जो हमारे लिए जीवन का सर्वोच्च बलिदान देते हैं।

इश्क

– भागीरथ प्रसाद,
डी.ई.ओ.

इश्क के परिंदों को आजाद कर दे,
यूं किसी को कैद में रखने से मोहब्बत तो नहीं होती
अगर जंजीरों में बांधके रखने से हो सके प्यार
तो दिल में मुस्कुराने वाले चेहरे, यूं रातों में नहीं रोते
यूं किसी को कैद में रखने से, मोहब्बत तो नहीं होती।

इस कैद को आज एक अंजाम पर लाते हैं,
चलो इन इश्क की जंजीरों से आज तुम्हें आजाद कराते हैं।
यह जिस्म रूह के सिलसिले को, हम यहीं दफना जाते हैं।
हो आंसू या हो मुस्कान हम उसे दिल से अपनाते हैं।
चलो इन इश्क की जंजीरों से आज तुम्हें आजाद कराते हैं।

कितना घुट कर जिओगेतुम मेरे साथ
तुम्हारी मुस्कान के पीछे का वह दर्द
मुझे आज भी सहमा जाते हैं
सुनो आज तुम्हारी उलझन हम मिलकर सुलझाते हैं
चलो इन इश्क की जंजीरों से आज तुम्हें आजाद कराते हैं।

खुश नहीं हो अब तुम मेरे साथ,
हमारे रिश्ते में अब कहाँ रही वह बात,
अब वह शर्म भी कहाँ आती है
जहां होती थी हमारी रूह की मुलाकात,
यह बातें कभी–कभी, इस दिल को चुभ जाती हैं
प्यार की इन राहों में, कुछ कच्चे मोड़ भी आ जाते हैं
चलो इन इश्क की जंजीरों से आज तुम्हें आजाद कराते हैं।

हाँ बहुत ज्यादा महसूस होगी तुम्हारी कमी,
पर कौन है यहाँ जिसके पास कमी नहीं है।
मेरे यारों, आसमां के पास भी तो अपनी जमीन नहीं हैं।
रूकमणी संग ब्याह तो किस्मत का खेल था
कान्हा के मन में राधा के सिवा कोई और न था।
कौन है यहाँ जिसके पास कमी नहीं है?

टूट रही हूँ तो टूटी ही सही, अब बवाल कैसा?
तुम उसके साथ खुश हो तो बस! अब सवाल कैसा?
अगर उसकी बांहों में तुम्हें सुकून भरी पनाह मिल जाए,
इसमें तुम्हें चैन की नींद आ जाए,
जो तुम्हें मुझसे भी ज्यादा प्यार कर पाए,
तो जनाब! दिक्कत कैसा?

खैर! यह सब कहना तो मेरा फर्ज थ,
कहाँ पता था मुझे कि
जो मेरी कोई भी बात एक बार में नहीं मानता।
वो यह एक चीज फटाफट मान जाएगा।
कहाँ पता था आजादी सुनके तू मुझे यूं अकेला छोड़ जाएगा,
हाँ तुझे आजाद करने की बातें भी मैं ही करती थी,
कहाँ मालूम था कि तू इतनी जल्दी हार मान जाएगा।

हाँ माना मैं नासमझ हूँ,
लेकिन कोशिश समझाने की तूने भी नहीं की,
मैं गुनहगार हूँ भी तो कैसे?
तेरे दिए हुए दर्द में, सहाहद भी तो मैंने ही मिलाई थी।
अब तो इतनी टूट गई हूँ कि लोग मुझे ख्वाब कहने लगे हैं।
यह आँसू और दर्द मुझे तेजाब से लगने लगे हैं।

बहुत हुआ, बहुत अच्छे कर्म कर लिए तेरे साथ,
क्यों ना कुछ अपने लिए भी करूँ
जब मुझे कोई फर्क ही नहीं पड़ता,
तो फिर मैं घुट–घट क्यों मरूँ?
जब करने वाला ना डरा तो मैं कहने से फिर क्यों डरूँ।

अब सुन, मेरी जरूरत है तुम,
मगर मैं कोई तेरा छोटा हिस्सा नहीं हूँ,
मालूम है तू शायर है,
पर तेरी शायरी का मैं कोई आम किस्सा नहीं।

मौसम के रूप

गौतम वर्मा,
डी.ई.ओ.

मौसम का राजा 'बसंत' आता है
संग खुशबू फूलों की लाता है
धरती पर हरियाली फैलाता है
किसानों के घर खुशहाली लाता है।

तब गर्मी का मौसम आता है
संग फलों का राजा आता है
नदी–नाले और कुँओं को सुखाता है
धरती को प्यास से तड़पाता है।

लेकिन मौसम से लोगों दुःख देखा नहीं जाता है
इसलिए वह बारिश को लाता है
जिससे फसल में हरियाली आती है
और धरती की प्यास बुझ पाती है।

अखण्ड विचार है अपना!

– श्रीमती रीना मिश्रा

वो कहते हैं न, 'हौंसलों से ही उड़ान भरे जाते हैं'। ये कहावत यूँ ही नहीं प्रसिद्ध है। आकाश में उड़ने का ख्वाब यदि मन में आ गया हो तो उसे साकार करने का प्रयास शुरू कर देना चाहिए। अंजाम की फिक्र तो वे करते हैं जिनके इरादे कमज़ोर होते हैं। आज हमारी युवा पीढ़ी को अगर सबसे ज्यादा किसी चीज़ की जरूरत है तो वो यही है क्योंकि बुलन्द इरादे के बिना उड़ान तो क्या, एक कदम भी बढ़ाना मुश्किल है।

आज हम जिस समाज में रह रहे हैं उसमें विकास की परिभाषा पहले से बहुत बदल चुकी है। विकास की गति इतनी तीव्र है कि संकोच और चिंतन करने वालों की गुंजाइश ही नहीं या यूँ कहें कि निर्णायक पल के लिए रूकना किसी बड़े समझौते से कम नहीं। युग–युगांतर से चली आ रही हमारी संस्कृति हमारी विचाराधाराओं को जकड़े हुए है। ऐसे तो प्रगति और विनाश का पथ कभी अलग नहीं रहा, वो विचार ही है जो इसमें फासला उत्पन्न करने में अहम भूमिका निभाती है। लेकिन आज, लोगों के हाव–भाव को देखकर सब–कुछ समझा जा सकता है।

संकट के बादल कब कहाँ मिल जाए, इसका कोई ठिकाना नहीं। वक्त भी कब करवट ले–ले इसकी गारंटी नहीं। इन सब के बीच यदि मैं ''अखण्ड विचार है अपना'' कहती हूँ तो इसमें असहजता की कोई बात नहीं किंतु आश्चर्य तो होगा क्योंकि इस विशालकाय समाज में सांसारिक दायित्वों और संस्कार का निर्वाह कैसे संभव है? संभलकर न चलने वालों के लिए हर राह पर चलना मुश्किल है। जमाने के हिसाब से विकास तो कम नहीं था पर रावण के घर से निकले एक विभिषण ने उसका विनाश तय कर दिया। विकास से विनाश का सफर कैसे पूरा हुआ यह सभी जानते जानते हैं फिर भी लोग अज्ञानता दिखाते हैं और कई प्रतिकूल गतिविधियों को अंजाम देते हैं जिसका समाज पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए बेहतर है कि विकास की इच्छा मन में रखें जरूर लेकिन सही मार्ग पर चलने का विचार भी मन में रखें। यदि उड़ान भरने का इरादा मन में हो तो 'अखण्ड विचार है अपना' का मंत्र मन में लेकर चलें। क्योंकि रास्ते रोकने वाली अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। कभी–कभी अच्छी चीजें होने के लिए इरादे के साथ–साथ साहस की भी आवश्यकता होती है। कई लोग तो ऐसे होते हैं जो सफर शुरू करने से पहले ही आने वाली कठिनाइयों, कंटीले और पथरीले रास्ते के बारे में

सोच–सोंच कर परेशान होने लगते हैं। किंतु यह सच है कि टूटे और बिखरे हुए पंख के बदौलत कोई परिन्दा भी उड़ान नहीं भर सकता, हम तो बस इंसान हैं।

यह कहना बिल्कुल गलत नहीं कि इसी हौंसले के बदौलत 'विंग कमांडर अभिमन्यु' ने देश का सम्मान बढ़ाया है। जोखिम भरे माहौल में उड़ान भरने की ख्वाईश तो उनमें बचपन से थी पर हौंसला भी कम न था। तभी तो दुश्मन के मुँह से उसके सारे सीमाओं को चीरते हुए सकुशल घर वापसी सुनिश्चित हो सकी। सिर्फ सपनों का उड़ान भरने वालों के लिए नहीं बल्कि यह वो मंत्र है जो विकट से विकट स्थिति आ जाने पर भी किसी को पीछे नहीं मुड़ने देता। इसलिए, इस युवा पीढ़ी के लिए यह निहायत जरूरी है कि मन में उत्पन्न विचारों को कभी खंडित न होने दें। लेकिन इतना जरूरी है कि उन विचारों को अच्छे संस्कारों के जंजीरों से जकड़ कर रखें क्योंकि इसमें सकारात्मकता का होना भी जरूरी है। 'अखंड विचार है अपना' वो मंत्र है जो हमारे अंदर ऊर्जा भरने के साथ–साथ, सफलता की उड़ान भरने की शक्ति प्रदान करता है।

बचपन की यादें

— संगम कुमारी
(गौतम वर्मा, डी.ई.ओ.)

आई रे आई, बचपन की याद आई,
जहाँ खेला करते थे छुपन–छुपाई,
सर्दी के मौसम में खुब पतंग उड़ाई,
गिल्ली–डंडे की भी आवाज आई,
जहाँ दोस्तों से करत थे लड़ाई,
बारिश के पानी में खुब कस्ती बहाई,
सड़क के गड्ढे में खूब करते थे कुदाई,
स्कूल न जाने के बनाते थे हजारों बहानें,
किताबों से न करते थे दोस्ती, न कलम से यारी,
छोटी सी चॉकलेट के लिए होती थी भाई से लड़ाई,
फिर पापा से होती थी दोनों की पिटाई,
माँ की गोद में बैठने को भी होती लड़ाई,
आई रे आई बचपन की याद आई।

बारिश की बूँदें

– प्रांजलि मिश्रा

झमाझम बारिश हो रही है,
मोर छमा–छम नाच रहे हैं,
उड़ते बादल, डोल रहे मन
बारिश में नाचे सब छम–छम!
सूरज की लाली को देखो
आँख–मिचोली खेल रही हैं,
घने–अंधेरे बादल में भी
खुब उजियाला घोल रही हैं।
कल तक जो मुर्झित थी पंखें
उन पंखों को भी उड़ने दो,
बारिश की थमती बूँदों को
आज झमाझम गिर जाने दो।
गिरती है धरती पर जब–जब
बारिश की वे बूंदें,
पंछी सुर में शोर मचाते
मोर छमा–छम नाचे।

पगडंडियाँ

– श्रीमती ममता दे

चलते उस राह की पगडंडियाँ बताती हैं हमें,
कोई इस राह पे भटका है श्ह सुझाती हैं हमें।
सावन तो झूम के आए और चले भी गए,
गये थे वे भी इधर से कि फिर नहीं आए।
कही थी बात उनसे आज लौट आने की,
अब तो अरसे भी हमें वर्षों में लगने ही लगे।
जब कभी भूल कर भी मूल से पलट जाओ,
राख की खाक को सिद्दत से गले लगा जाओ।
बिसरे राही को भी राह पगडंडियाँ ही देती है,
साँझ के पक्षी भी इन साखियों में पलते हैं।
कितने राही भी यहाँ अपने पथ से भटक गए,
अब इन रास्तों से ही कह दो कि ये बदल जाएं।
भटके राही को भी आज सुकून मिले,
फिर से ये पगडंडियाँ आकर के उस राही से मिले।

मैं पैसा हूँ

– अमित कुमार वर्मन,
डी.ई.ओ.

मैं नमक की तरह हूँ
जो जरूरी तो है मगर जरूरत से ज्यादा
हो तो जिंदगी का स्वाद बिगड़ जाता है।
मैं भगवान नहीं, मगर लोग मुझे
भगवान से कम नहीं मानते।
मैं भगवान नहीं मगर लोग मुझे
भगवान से कम नहीं मानते।
मुझे आप मरने के बाद ऊपर नहीं ले जा सकते,
मगर जीते–जी मैं आपको
बहुत ऊपर ले जा सकता हूँ।
मैं नई–नई रिश्तेदारियाँ बनाता हूँ
मगर असली और पुरानी बिगाड़ देता हूँ।
मैं कुछ भी नहीं हूँ मगर मैं निर्धारित करता हूँ
कि लोग आपको कितनी इज्जत देते हैं।
मुझे पसन्द करो सिर्फ इस हद तक कि
लोग आपको नापसन्द न करने लगें।
मैं सारे फसाद की जड़ हूँ
मगर फिर भी न जाने क्यों
सब मेरे पीछे इतना पागल हैं।
मैं शैतान नहीं हूँ लेकिन लोग
अक्सर मेरी वजह से गुनाह करते हैं।
मैं तीसरा व्यक्ति नहीं हूँ लेकिन मेरी
वजह से पति–पत्नी आपस में झगड़ते हैं।
मैंने कभी किसी के लिए बलिदान
नहीं दिया लेकिन कई लोग मेरे लिए
अपनी जान दे रहे हैं।
मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि
मैं आपके लिए सब कुछ खरीद सकता हूँ
आपके लिए दवाईयाँ ला सकता हूँ
लेकिन आपकी उम्र नहीं बढ़ा सकता।
एक दिन जब भगवान का बुलावा आयेगा
तो मैं आपके साथ नहीं जाऊँगा
बल्कि आपको अपने पाप भुगतने के लिए
अकेला छोड़ दूँगा।
और यह स्थिति कभी भी आ सकती है
आपको अपना बनाने वाले का खुद
ही जवाब देना पड़ेगा और उसका
निर्णय स्वीकारना होगा।
उस समय सर्व शक्तिमान आपका फैसला
करेगा और मेरे बारे में पूछेगा
लेकिन मैं आपसे अभी पूछता हूँ
क्या आपने जीवन भर मेरा सही इस्तेमाल
किया या आपने मुझे ही भगवान बना दिया।
एक अंतिम जानकारी मेरी तरफ से मैं
'ऊपर' आपके साथ नहीं जाऊँगा
बल्कि आपकी सत्कर्मों की पूँजी ही
आपके साथ चलेगी।
इतिहास में कई ऐसे उदाहरण
मिल जाएंगे जिनके पास मैं बेशुमार था
मगर फिर भी वो मरे तो उनके लिए
रोने वाला भी कोई नहीं था।
मैं आपको एक बार फिर याद दिला दूँ
कि मैं भगवान नहीं हूँ और हाँ मुझे
आजाद रहने की आदत है मुझे ताले
में बंद मत करो।

आज की द्रौपदी

– शंकर बी. थापा

परिस्थितियों के आगे विवश है जो वह है आज की द्रौपदी
समाज जिसपर उंगली उठाती है, वह है आज की द्रौपदी,
सरेआम जिसकी इज्जत चली जाती है, वह है आज की द्रौपदी,
सड़कों पर बच्चों सहित भीख मांगती माँ है आज की द्रौपदी,
एक लाचार भाई की बहन है, वह है आज की द्रौपदी,
कमज़ोर माँ–बाप की बेटी है आज की द्रौपदी,
दूसरे मुल्कों में बेची जाती है आज की द्रौपदी,
समाज के दरिंदों ने जिसे नोचा है, वह है आज की द्रौपदी
वेश्या का नाम जिसे दिया जाता है वह है आज की द्रौपदी।
पर क्या किसी ने द्रौपदी की समस्या का मूल कारण जाना है?
किस पीड़ा को सहती आई है क्या उसे समझने का प्रयास किया है?
नारी के प्रति शोषण तब भी था आज भी है,
तब की द्रौपदी और आज की द्रौपदी में कुछ अधिक अंतर नहीं है
फर्क बस इतना है कि परिस्थितियाँ बदल गईं हैं।

स्वच्छता

– रमेश कुमार बिस्वा,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

स्वच्छता जीवन का दूसरा नाम है। स्वच्छ रहने के लिए मन का स्वच्छ होना या बनाए रखना जरूरी है। अंग्रेजी में एक कहावत है कि "Cleanliness is next to Godliness" जो हमें सफाई पर ध्यान रखने की सीख देता है। हमें इन शब्दों को न सिर्फ याद रखना चाहिए बल्कि अमल में लाना चाहिए। हमें अपने घर के साथ–साथ कार्यालय की साफ–साफ का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए क्योंकि हम अपना अधिकांश समय कार्यालय में ही व्यतीत करते हैं। हमें यह ध्यान देना चाहिए कि रोजाना निकलने वाल रद्दी का अच्छी तरह से निस्तारण हो। कोशिश करनी चाहिए कि कम से कम बर्बादी हो। साफ–सफाई के दौरान कई ऐसी चीजें निकलती हैं जो हमारे स्वास्थ के लिए नुकसानदेह होती हैं। हमें ध्यान रखना चाहिए कि उन चीजों को खुले में न फेंका जाए। दैनिक उपयोग की वस्तुओं की बर्बादी को भी रोकें। रोज–रोज देखने को मिलता है कि लोग कुछ चीजों का उपयोग से ज्यादा तो दुरूपयोग करते हैं। एक उदाहरण तो कागज का ही ले लीजिए।

चूँकि हम यहाँ पर स्वच्छता की बात कर रहे हैं, लोगों को इसके बारे में अधिक से अधिक जागरूक किया जाना चाहिए। स्वच्छ तन–मन रहेगा, तो हमारा समाज अर्थात आस–पास की जगहें, लोग आदि सबकुछ स्वच्छ होगा। किंतु इतनी विशाल जनसंख्या को स्वस्थ रखना किसी एक की वश की बात नहीं है।

स्वच्छता के प्रति गाँधी जी के सपनों को पूरा करने की जिम्मेदारी हम सब की है। इसे किसी व्यक्ति विशेष या वर्ग तक सीमित नहीं किया जा सकता। वैसे आजकल तो कई समाजसेवी संस्थाओं ने मुहिम चलाकर इसे जन अभियान बनाने का काम शुरू कर दिया है। अच्छी शुरूआत के साथ–साथ यह एक अच्छा संकेत है। धीरे–धीरे ही सही, लोग शामिल तो होंगे ही और स्वच्छता के प्रति जागरूकता भी बढ़ेगी।

जेम (GeM): सुविधा का अंदाज

– दीनानाथ शाह,

सी.टी.

अक्सर बोलचाल की भाषा में हम कहते हैं कि, फलां काम को करने से इतना लाभ होगा जिसका अनुमान लगाना मुश्किल है। ऐसा सिर्फ सकारात्मक मामलों के लिए ही नहीं बल्कि नकारात्मक मामलों पर भी बराबर लागू होता है। कोई–कोई ऐसा भी कहता है कि फलां काम को करने से बहुत नुकसान हो सकता है। और इस प्रकार बाजार के सौदों से होने वाले लाभ–हानी के प्रति हम सतर्क हो जाते हैं। आजकल हम बाजार से होने वाले बचत के प्रति बहुत उत्सुक रहते हैं। घरेलू उपयोग की वस्तुओं के खरीददारी के लिए हमारे पास कई विकल्प मौजूद हैं जैसे फ्लिपकार्ट, अमेजॉन, सॉपक्लूज़ आदि जो किसी सुपर मार्केट की तरह ही हैं।

दरअसल, यह युग वन स्टॉप सॉप की प्रथा की ओर बहुत तेजी से बढ़ रहा है। भाग–दौड़ की जिन्दगी और भीड़ के डर ने लोगों का झुकाव इस ओर ऐसा बढ़ाया है जिससे विशाल नेटवर्क स्थापित हो गया है। गवर्नमेंट ई–मार्केट प्लेस सरकारी संस्थाओं के लिए इसी तरह का वन स्टॉप सॉप है जहाँ कार्यालयीन उपयोग की सामग्रियाँ उपलब्ध हैं। इसमें सरकारी कार्यालयों के साथ–साथ सेवा प्रदाताओं अर्थात सेवा प्रदान करने वाले इच्छुक व्यवसायियों का पंजीकरण करना अनिवार्य है। इसके पोर्टल की शुरूआत 9 अगस्त, 2016 को की गई थी। कार्यालयीन उपयोग की अधिकांश वस्तुएं उपलब्ध हैं। इसकी एक बहुत बड़ी खासियत है कि किसी भी ट्रांजैक्शन के शुरू होते ही खरीदने वाले और बिक्री करने वाले से संबंधित पंजीकृत सभी ओहदेदारों को तत्काल एसएमएस और ईमेल से सूचना मिल जाती है। इससे गुणवत्तापूर्ण सेवा का अंदाज लगाया जा सकता है। इंटरनेट के इस दौर में सुविधाएं तो अनेक हैं, बस हमें इसके करीब होने का एहसास हो, तभी हम इसकी सुविधाओं के अंदाज लगाने में कामयाब होंगे। शुरूआती दौर में भले ही कुछ कठिनाइयाँ हों पर इस पोर्टल के जरिए क्रय–विक्रय का केंद्र बनाकर, पारदर्शिता लाने के लिए ठोस कदम उठाने के साथ अच्छी पहल की गई है। निःसंदेह, आने वाले समय में इसका दायरा बढ़ेगा और सुविधाएं बढ़ेंगी।

अंधराष्ट्रभक्त

– श्रीमती स्निग्धा फुकन,
हिंदी अधिकारी

अंधराष्ट्र शब्द एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ राष्ट्रवाद के विपरीत है। पिछले कई वर्षों में देखा गया है कि लोग बिना किसी चीज को समझे, तथ्यों को जाने बिना किसी भी बात में विश्वास करते हैं, चाहे परिणाम कुछ भी हो, उसकी वह परवाह नहीं करते और गलत काम को अंजाम देते हैं, जिसके बारे में उन्हें पता भी नहीं होता कि वे जो कर रहे हैं या करने जा रहे हैं उससे क्या हानि होगी, इस बात का वे विचार भी नहीं करते और दूसरे लोगों यानि अलगाववादी की विचारधारा में चलने लगते हैं और सोचते हैं कि हम जो कर रहे हैं वह देश के हित में हैं पर काम वह देश के हित के विपरीत कर रहे हैं। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि जगह–जगह पर दंगे, मारपीट, धर्म के नाम पर लोगों में भेद–भाव और दुश्मनी, एक दूसरे के दुश्मनी हो जाते हैं और छोटी–सी बात को तिल का ताड़ बनाकर एक दूसरे का प्राण के दुश्मन बन जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि लोगों का एक राज्य से दूसरे राज्य में जाना दुर्लभ हो जाता है। लोग राष्ट्रवाद के विपरीत अंधराष्ट्रभक्त बन जाते हैं और आपस में बैर की भावना उत्पन्न हो जाती है। एक ही राज्य, एक ही राष्ट्र में रहने वाले लोग एक दूसरे के शत्रु हो जाते हैं। अतः हम जानते है कि आज का युग सोशल मीडिया का है और इसमें इसका बहुत बड़ा योगदान है। इसलिए हमसभी को इससे बचना चाहिए और सोशल मीडिया के प्रयोग सही कामों में करना चाहिए ताकि लोगों में असंतोष की भावना उत्पन्न न हो और हम सभी एक राष्ट्र में भाई–भाई के तरह हँसी–खुशी से रहे तथा इस मानसिक बीमारी से बच सके एवं देश की उन्नति में भागीदारी कर सकें।

अंग्रेजी का भूत

– श्रीमती मंजिता राय चौधुरी,
सहायक लेखा अधिकारी

अंग्रेजी का भूत,
सिर पर चढ़कर बोलने लगा है।
क्या गाँव, क्या शहर,
इसी का प्रचार बढ़ा है
आज हम सब पढ़े–लिखे हैं लो हाय,
बेचारा नमस्कार डरा–डरा है
अंग्रेजी 'हैलो' के सामने
'नमस्कार' तो ऐसे ही भाग जाए
भूल गए सब अपना ज्ञान
अंग्रेजी में बात करे तो बढ़ें मान।
कहीं फिरकी, कहीं ब्रेक डांस हुआ
आज हम भूल गए अपनी संस्कार,
'धन्यवाद' और 'माफी' शब्द हो गए बाहर
अब भी थैंक यू, सॉरी और
वो हैपी चल पड़ा।
अंग्रेजी तो चली गई, पर अंग्रेजी भूल गए ले जन्म
अंग्रेजी के कारण आज हिंदी को आता है रोना
हर 14 सितम्बर को हिंदी दिवस समारोह में
बजाते हैं हमस ब की मन की वीणा
ये पुकारते हुए कि करो मेरी आदर सम्मान
मैं हूँ राष्ट्र की पहचान, करो अपना
राष्ट्र भाषा की जय गान,
है इसी में सबकी पहचान।

दहेज प्रथा

– मनीष कुमार,
लेखाकार

नहीं अब रहेंगे वे दिन
मिटेंगे जल्द दहेज के दिन
अपने घर को भरने की खातिर
दुसरे के घर को उजाड़ना
कहाँ बहादुरी है!

एक बेटी के पिता की जिन्दगी
पैसे जोड़ते हुए गुजर जाती है
देहज प्रथा,
हमें अन्दर तक तड़पाती है।

उठ रही है आवाज
हटेगी यह दहेज प्रथा
आएगी हमारी खुशियों की बारी
फिर न लगेगी बेटियां
किसी बापू को भारी!

अब हवा से जमीन तक
बेटियां उड़ रही हैं,
घर रोशन कर रही हैं
आजादी की ओर बढ़ रही।

पर्यावरण रक्षा

– श्री हिमानीश राय चौधुरी,
सुपुत्र श्रीमती मंजिता राय चौधुरी

आओ हम सब करे ये प्रतिज्ञा,
प्रदूषण भगाते हुए करें
धरती माँ की रक्षा।
आज से करें हम प्लास्टिक का वर्जन
प्लास्टिक ने बढ़ाया है धरती पर प्रदूषण।
पर्यावरण की रक्षा करके
करें धरती माँ का श्रृंगार
जहाँ से मिलते हैं हमें
स्वच्छ हवा और आहार।
प्लास्टिक के कारण हुई है
धरती माँ जहरीली
क्यों न हम इस्तेमाल करें
कपड़े की थैली।
प्लास्टिक के कारण हुई है धरती माँ बीमार
इसी कारण हर साल आते हैं जगह–जगह पर बाढ़।
स्वच्छ पर्यावरण से महके खेत खलिहान
पर्यावरण की रक्षा करके करें कार्य महान
धरती माँ का आदर करें और बंद करें अत्याचार
धरती करे पुकार
सब हो जाए होशियार।

संकेत संचार

– प्रियतोष चौधुरी,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मेंढक की टर्र–टर्र से बारिश होती है।
मूर्गा के कूकडू से रात खत्म होती है।
कुत्ता के भौं–भौं से चोर भाग जाते हैं।
उल्लू के कलरव से शुभ होता है।
गिद्द के चिल्लाने से अशुभ होता है।
कौआ के कांव–कांव से मेहमान आते हैं।
चिड़िया के चह–चहाने से खुशियाँ आती है।
और छिपकली बताती है क्या है सच क्या है झूठ।
आँखों की खुजली बताती है आने वाले हैं बहुत सारे दुख।
पैसों का आना दाहिने हाथ की खुजली बताती है।
सभी कहते हैं टूटे हुए आइने में नहीं देखनी चाहिए अपनी सूरत
क्योंकि इससे आती है जिंदगी में मुसीबत।
बिल्ली रास्ता काटे तो उस रास्ते से गुजरना है मना।
इतने सारे संकेतों के बावजूद हम हो गए काना।

कल्पना

– राज कुमार सुनार,
एम टी एस

राइट बंधुओं की कल्पना ने
आकाश में उड़ने वाले विमानों को जन्म दिया,
गाँधी जी की कल्पना ने
आजादी को जन्म दिया।
जॉर्ज की कल्पना ने,
रंगीन फिल्मों को जन्म दिया।
योगीजी महाराज की कल्पना ने,
दिल्ली के भव्य अक्षरधाम मंदिर का निर्माण किया।
ग्राहम बेल की कल्पना ने,
टेलीफोन को जन्म दिया।
शाहजहां की कल्पना ने,
ताजमहल को जन्म दिया।
बिल गेट्स की कल्पना ने,
माइक्रोसॉफ्ट को जन्म दिया।
अम्बानी की कल्पना ने,
रिलायन्स को जन्म दिया।
और हमारी कल्पना ने,
इस रचना को जन्म दिया।

तारे

– राज कुमार सुनार,
एम.टी.एस.

चम–चम चम–चम चमके तारे
नीले गगन में तुम ही प्यारे
निकलते हो तुम रातों में किंतु
छोटे से ही आश्चर्य जनक बिंदु
दी तुम्हें जो उज्ज्वल ज्योति जिसने
चमकते ही रहो रातों मे तुम।
चमक सके उनकी मालाएं
थक न सके तारे की चम–चम
गाते रहे हम मधूर गीत
रात चमकते सितारों के बीच।

अनमोल वचन

– श्रीमती शयंत्तनी गुप्ता

1. जब हम किसी की प्रशंसा नहीं करते तो वह स्वयं अपनी प्रशंसा करने लगता है।
2. दूसरों के विचारों का आदर करो तो संसार तुम्हारे विचारों का भी आदर करेगा।
3. इतने कड़वे न बनो कि कोई थूक दे और इतने मीठे भी मत बनो कि कोई निगल दे।
4. क्रोध जब द्वार से प्रवेश करता है तो प्रेम अपने आप ही खिड़की के रास्ते से बाहर निकल जाता है।
5. जैसा तुम अपने लिए चाहते हो वैसा ही तुम दूसरे के लिए चाहो।
6. किसी व्यक्ति या वस्तु से इतना लगाव या प्रेम न रखो ताकि वक्त हमें किसी दुख या मोह में न फंसाए।
7. विचार का दीपक बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है।
8. लापरवाही अज्ञानता से भी अधिक क्षति पहुँचाती है।
9. बोलने से पहले सुनना चाहिए।
10. मनुष्य जैसा अपने हृदय में विचारता है वैसा ही बन जाता है।

भ्रमण की कहानी

– श्रीमती माधवी देब,

वरिश्ठ लेखा अधिकारी

मेरे जीवन में भ्रमण करना ही सबसे बड़ा शौक है और समय निकालकर मैं उसे पूरा करने की कोशिश करती हूँ। हाल ही में मैं पाँच दिनों की छुट्टी लेकर सपरिवार अपनी गाड़ी से भूटान और गैंग्टॉक जाने का निश्चय की। सुबह सात बजे हम लोग शिलाँग से शाम को 6.30 बजे श्रीरामपुर पहुँचे। श्रीरामपुर, असम और बांग्लादेश का बॉर्डर है। वहाँ हमारे एक मित्र हैं। उन्होंने वहाँ हमारे रहने की समुचित व्यवस्था की। अगले दिन हमलोग भूटान की ओर चल पड़े। भूटान बहुत ही सुन्दर और दर्शनीय जगह है। हम बहुत उत्साहित थे। यह सफर लगभग तीन घंटे का था। भूटान पहुँचकर हमें बहुत आनंद महसूस हो रहा था। सबसे पहले वहाँ पहुँचने पर हमारे पहचान पत्रों की जाँच हुई। इसके बाद हमें जाने की अनुमति मिली। भूटान का स्थान है 'फुटशिलींग' है जो बहुत ही दर्शनीय स्थल है। वहाँ मंदिर और खुबसूरत सड़कें हैं। साफ–सफाई पर विशेष ध्यान रखा गया है जो हमारे मन को भा गया।

भूटान के लोग बहुत ही नम्र और शांत स्वभाव के हैं। फुटशिलींग में कुछ मंदिर हैं जो लगभग एक हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित है। भूटान की प्राकृतिक सुन्दरता बहुत ही मनमोहक है। हमलोग धीरे–धीरे पहाड़ की चोटी पर चढ़ें और वहाँ से कुछ दूरी पर दूसरी ओर नीचे देखने पर भारत का नजारा बहुत ही सुन्दर लग रहा था। ऊँचाई पर ऐसा लग रहा था कि हम हवाई जहाज पर थे। इसके बाद हम बाजार की ओर गए। बाजार में भारतीय रूपए का चलन देखकर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी। मैंने अपनी इस यात्रा को यादगार बनाने के लिए भूटान के पाँच रूपए का एक नोट भी ले लिया था। हमें शाम को भूटान से निकलकर गाड़ी से पहाड़ी रास्तों से गुजरते हुए भय लग रहा था। इस दौरान एक तरफ तिस्ता नदी थी और दूसरी और ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ थी और साथ ही साथ कभी–कभी बारिश भी हो रही थी। फिर हम गैंग्टॉक पहुँच गए। इसके बाद अगले दिन हमलोग नाथूला बॉर्डर देखने के लिए निकल पड़े। यह समुद्र तल से लगभग 14500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ ऑक्सीजन की कमी महसूस होती है। सबसे बड़ी बात यह है कि नाथूला बॉर्डर चीन और भारत की सीमा को अंकित करता है। यहाँ हमलोगों ने भारतीय सेना के जवानों को देखा जो हमारी सुरक्षा के लिए पूरी निष्ठा के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए दिन रात सीमा पर डट कर खड़े थे। इसे देख मैं सोचने लगी कि हमलोग अपने घरों में परिवार के साथ चैन से जीवन बीताते हैं और ये सेना हमारी सुख–शांति के लिए अपने परिवार को छोड़कर बॉर्डर पर हमारी सुरक्षा हेतु डटे रहती हैं। मेरे मन में ये ख्याल आया इन सैनिकों के कारण ही हमारा अस्तित्व है और मैं इन्हें सलाम करती हूँ। इसके बाद हमारी भ्रमण यात्रा समाप्त हुई और हम सुखद अनुभूति के साथ शिलाँग लौट आए।

तीन का चक्कर

– प्रियतोष चौधुरी,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

तीन चीजों पर हमेशा ध्यान रखना चाहिए
नदी किनारे कभी घर न बनाना
जिस वाहन में ब्रेक नहीं
जिस नारी का कोई घर नहीं है
उनको कभी न अपनाना।
तीन चीजें जिंदगी में एक ही बार मिलती है–
माता–पिता
जवानी और
सुन्दरता!
तीन चीजें जो कभी लौटकर वापस नहीं आती–
बंदूक की गोली
मुँह से निकली बोली और
शरीर से निकला प्राण।
तीन चीजें जो मृत्यु के बाद भी काम आती है–
अच्छे कर्म
अच्छे संतान और
सम्मान।
तीन चीजें जो इंसान की जिंदगी में दुख लाते हैं–
चोरी
धोखा और
झूठ।

बोलो चिड़िया

– उमा देवी थापा

दे स्वच्छंद उड़ने का अभिशाप
क्यों दिया बंधन का वरदान?
बोलो चिड़िया, हे भवगान!
अब तो सब अपना मोल जताते,
कई मुस्काते, कई पिंजर को और हिलाते,
कोई मुस्कान पिंजरबध की कोशिश मिटाने की करते।
सहमा पिंजरबध कमी–कमी और सहम जाता,
पर आस पास किसी को पता।
आँखें बंधन को तकता।
मन से ईश्वर को पुकारत, पूछती
क्या कोई पिंजरा ऐसा है नहीं?
वो अपने बंधन में मुझे बांध ले
पर न छीने मुस्कान मेरी
रह जाऊँ उस पिंजरे में जीवन भर
पर न काटे मेरी आजादी मेरे पर।

दुख दर्द अपने–अपने

– श्रीमती जेनेविव हेक

पर्यवेक्षक

अगर एक दिन आई जहाँ सबको
अपने–अपने दुख दर्द, परेशानियाँ टेबल के ऊपर
रखने को इज़ाजत मिले और
दूसरों के दुख दर्द के साथ
बदलने की इज़ाजत मिले।
यकीन के साथ कह सकती है कि
एक पल में ही सभी लोगों ने चुपचाप
अपने–अपने दुख दर्द वापस लेंगे
और चले जाएंगे टेबल छोड़कर।

तोहफा

लोगों का प्यार
कदर आपको यूँ हीं नहीं मिल जाता,
बल्कि तोहफे के तौर पर मिलती है
खुद के चरित्र से।
मौका तो दीजिए हर दिन के लिए
ताकि वह बन सके
आपके जिंदगी के सबसे
सुन्दर और महत्वपूर्ण दिन।

श्री

– राज कुमार सुनार,
एम टी एस

आपको उपहार देने के लिए मुझे
किसी वस्तु की तलाश थी
लेकिन क्या दूँ, और क्या न दूँ?
इसी में मन उलझा था
अंततः विकल्प मिल ही गया
अब मैं उपहार के रूप में आपको
उपासना करने की एक तकलीफ अर्पित करता हूँ
प्रकृति के द्वारा आपको प्रदान की गई
अद्वितीय भेंट को
पहचानने में और
उसका उपयोग करने में
मेरी यह भेंट सहायक होगी
पूर्ण आशा और विश्वास के साथ
आपको यह भेंट अर्पित करता हूँ
इसका उपयोग करें और लाभान्वित हों।

इंटरनेट की उपयोगिता तथा आवश्यकता

– मधुश्री देब

पुराने जमाने में इंटरनेट के माध्यम के मात्र वेबसाइट ब्राउज़ किए जाते थे या ईमेल भेजे जाते थे। परंतु आज के इस आधुनिक युग में इंटरनेट को दुनिया के हर एक क्षेत्र में हर टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए कार्य के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। इंटरनेट अब एक प्रकार से मनुष्य की जरूरत बन चुका है।

इंटरनेट ने मनुष्य के जीवन में जितनी सुविधाएं दी है उतनी ही यह धीरे–धीरे मनुष्य के लिए खतरा बनता जा रहा है। आज इंटरनेट घर–घर तक पहुँच चुका है और बच्चे से लेकर बूढ़े तक, हर कोई इसका उपयोग कर रहे हैं। भले ही लोग इंटरनेट को मनोरंजन के रूप में उपयोग कर रहे हैं या व्यापार के लिए इंटरनेट के लाभ और हानियों के बारे में पता होना चाहिए।

30 जून 2017 के एक रिपोर्ट के अनुसार चीन, भारत, अमेरिका, ब्राजील देश में लोग सबसे ज्यादा इंटरनेट का उपयोग करते हैं। लगभग विश्व के सभी देशों में इंटरनेट की सुविधा मोबाइल कंपनियाँ अपने उपभोक्ताओं से तय किए डाटा प्लान के अनुसार पैसे लेती हैं। परन्तु उन सभी कंपनियों को इंटरनेट एक विश्वस्तरीय ऑर्गेनाइजेशन जिसे इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर कहा जाता है उनके माध्यम से मिलता है।

इंटरनेट के कुछ फायदे :–

1. ऑनलाइन बिल का भुगतान
2. सूचना भेजना प्राप्त करना
3. ऑनलाइन शॉपिंग
4. मनोरंजन
5. व्यापार को बढ़ावा

धोखा

– भागीरथ प्रसाद,
डी.ई.ओ.

शायद मुझे प्रेम तब हुआ,
जब तुम मुझे सुधारने के बजाय
खुद मेरे साथ थोड़ा और बिगड़ रही थी.....
शायद मुझे प्रेम तब हुआ
जब मेरी अपनी तलाश में,
तुम मेरे साथ चल रही थी.....
शायद मुझे प्रेम तब हुआ,
जब मेरे सपनों को पूरा करने के लिए
तुम मेरे साथ पूरी रात जाग रही थी.....

शायद मुझे प्रेम तब हुआ,
जब मेरे हर दर्द में,
तुम्हारी आंखें भी आंसू बहा रही थी.....
शायद मुझे प्रेम तब हुआ
जब मेरे ऑनलाइन न आने पर,
तुम बिना मैसेज किए,
बस यूं ही मेरा इंतजार कर रही थी....
शायद मुझे प्रेम तब हुआ,
जब तुम बिना मुझसे नजरें मिलाए,
मेरी पलकों पर राज कर रही थी...
शायद मुझे प्रेम तब हुआ,
जब बिना किसी हिचकिचाहट के,
तुम मेरे सामने अपने सारे राज खोल रही थी...
कुछ यूं मैं सोच रहा था,
कुछ यूं मैं सोच रहा था,
कि किसी ने पीछे से मेरी आँखों पर पट्टी बांध दी,
एक ख्वाब ने इस प्रेम से पर्दा हटा दिया,
धोखे से निकाल कर
मुझको जगा दिया।

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर मंच का संचालन करते हुए श्री पुरूषोत्तम गिरि, कनिष्ठ अनुवादक

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आनन्द लेते हुए दर्शकगण

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर स्थानीय कलाकारों द्वारा संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर मंच से कार्यक्रम को संबोधित करती हुई श्रीमती शालिनी दहिया, कनिष्ठ अनुवादक

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्र)

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्र)

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार

"हिन्दी दिवस 2018" के अवसर पर राष्ट्रगान प्रस्तुत करते हुए दर्शकगण

हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर उप महालेखाकार (ले.व.ह.) एवं अतिथि वक्ता

हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर अतिथि वक्ता एवं प्रतिभागीगण

हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर अतिथि वक्ता एवं प्रतिभागीगण

भा.ले.व.ले.वि. के उत्तर-पूर्व "कैरम बोर्ड प्रतियोगिता-2018" के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकर (ले.व.ह.) के विजयी दल/चैंपियन टीम के साथ प्रधान महालेखाकार

प्रधान महालेखाकार द्वारा कार्यालय में "खेल एवं सांस्कृतिक क्लब" का उद्घाटन

"स्वतंत्रता दिवस 2019" के अवसर पर कार्यालय में "राष्ट्रीय ध्वज" फहराते हुए प्रधान महालेखाकार

"स्वतंत्रता दिवस 2019" के अवसर पर लेखा व लेखापरीक्षा इस्टेट, मोतीनगर, शिलांग में "राष्ट्रीय ध्वज" फहराते हुए उप महालेखाकार (प्र)

बेटियाँ

– श्रीमती नमिता भट्टाचार्य

चाहते हैं बेटे, आ जाती है बेटियाँ
बचाए जाते हैं बेटे, मार दी जाती हैं बेटियाँ।
बेटी घर आए तो, क्यों न मनाएं खुशियाँ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी घर आए तो खुशियाँ मनाओ।
पढ़ाते हुए बेटियों को आगे बढ़ाओ।
बेटियाँ बोझ होती हैं
यह मानसिकता बदलो
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
क्यों रिश्ता इतना अजीब होता है
क्या बस बेटियों का यही नसीब होता है?
शिक्षा ही होती है बेटियों की पहचान
और बेटियों से हाती है हमारे समाज का निर्माण
तब जाकर होता है जग का कल्याण।
खर्च बहुत करते हैं हम बेटे पर,
पर घर तो संभालती है बेटियाँ,
अब हम यह माने या न माने,
अच्छी होती है बेटियाँ
बेटियों को आगे बढ़ाओ
सिर्फ और सिर्फ नारा मत बनाओ।

वादा

– श्रीमती जेनेविव हेक,
पर्यवेक्षक

खुद को इतना मजबूत
बनाने का वादा करें,
कि कुछ भी आपके मन की शांति को
भंग न कर सके।
अतीत की गलतियों
को करो भूलने का वादा,
और भविष्य की बड़ी उपलब्धियों को
करो पाने का वादा।
खुद को सुधारने के लिए
करना है वादा,
कि समय न बचे
दूसरों की आलोचना के लिए
न हो कभी इरादा।

कार की चमत्कार

– स्वास्तिक बी. रसाईली

क्या आप कारों के विषय में जानते हैं?

1. ऐसी कार जो किसी का स्वागत करे – नमस्कार
2. ऐसी कार जो हक जमाए – अधिकार
3. ऐसी कार जो घमंड दिखाए – अहंकार
4. ऐसी कार जिसमें रोशनी न हो – अंधकार
5. ऐसी कार जो किसी को बुलाए – पुकार
6. ऐसी कार जो किस का भला करे – परोपकार
7. ऐसी कार जो दूसरों को परामर्श दे – सलाहकार
8. ऐसी कार जो नई खोज करे – आविष्कार
9. ऐसी कार जो गीत गाए – गीतकार
10. ऐसी कार जो गीत को संगीत से सजाए – संगीतकार

" अंतराष्ट्रीय योग दिवस 2019" के अवसर पर कार्यालय में योग अभ्यास करते हुए अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

"सर्तकता जागरूकता सप्ताह 2018" के अवसर पर प्रतिज्ञा लेते हुए प्रधान महालेखाकार, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्र), उप महालेखाकार (ले.व.ह.) एवं स्थापना अधिकारी

"हिन्दी सप्ताह 2019" के अवसर अंताक्षरी प्रतियोगिता एक झलक

कैरम टूर्नामेंट की एक झलक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) मेघालय, शिलांग द्वारा आयोजित
भा.ले.व.ले.वि. के "उत्तर-पूर्व कैरम बोर्ड प्रतियोगिता-2019" का उद्घाटन समारोह

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) मेघालय, शिलांग द्वारा आयोजित
भा.ले.व.ले.वि. के "उत्तर-पूर्व कैरम बोर्ड प्रतियोगिता-2019" का उद्घाटन समारोह